MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

SUBJECT : **Ancient & Medival World History**

CLASS : **B.A. 5th Sem**

SESSION : **2021-2022**

Date / / Page no.

प्रश्न I पुरापाषाण काल की विशेषताओं का वर्णन करें

Q. 2 नवपाषाण काल से क्या अभिप्राय है। इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Q. 3. सुमेर के नगर राज्यों के उदय पर प्रकाश डालिए

Q. 4. सुमेर सभ्यता के संगठन में राज्य के सामाजिक और आर्थिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Q. 5. रोमन सभ्यता से क्या अभिप्राय है। इसके धार्मिक और सामाजिक जीवन बताए।

Q. 6. सामंतवाद के उदय के कारणों तथा विशेषताओं का वर्णन करें।

Q. 7. सामंतवाद के पतन के कारणों का वर्णन कीजिए

Q. 8. यूनानी सभ्यता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Q. 9. इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक तथा धार्मिक दशा का वर्णन कीजिए।

Q. 10. मुहम्मद साहब का आरंभिक जीवन तथा शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

Q. 11. उम्मैद खलीफाओं के अधीन इस्लामी राज्य का स्वरूप लिखिए।

Q. 12. अब्बासियों के शासनों के अधीन मुस्लिम राज्यों की विशेषताओं का वर्णन करें

Date / / UNIT-I Page no.

प्रश्न 1 → पुरापाषाण कालीन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

अथवा

आखेटक संग्रह से क्या अभिप्राय है? इसकी विशेषताएं बताइए?

उत्तर → भूमिका :→ पुरापाषाण काल मानव जीवन की सबसे अधिक लम्बी अवधि रही। मानव कंकालों, मानववत् प्राणी के जीवाश्मों, जीव-जन्तुओं की हड्डियों, पाषाण के उपकरणों और पहाड़ी गुफाओं से इस युग की जानकारी मिलती है। पुरापाषाण कालीन संस्कृति की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थी।

(1.) औजार :→ पुरापाषाण काल में मानव ने औजारों एवं हथियारों का प्रयोग करना आरम्भ किया। चिम्पांजी अथवा मानववत् प्राणी भी गड्ढे खोदने के लिए छड़ी का प्रयोग करते थे अथवा गड्ढे खोदकर कीड़े-मकोड़े, कंदमूल इत्यादि खाते थे इसके अलावा वे छड़ी की सहायता से फल भी तोड़ते थे। कई बार वे इन कार्यों के लिए पत्थरों का भी प्रयोग करते थे इस युग के प्रारम्भिक चरण में भोजन प्राप्त करने के लिए मानव ने इसी प्रकार के प्राकृतिक औजारों का उपयोग किया होगा कुछ इति-

DELTA My NoteBook

हासकारों का मत है कि आरम्भ में मानव ने वृक्ष की शाखाओं व लट्ठों का उपयोग उपकरणों के रूप में किया होगा, परन्तु इनसे वह छोटे एवं निर्बल पशुओं, जैसे - खरगोश, हिरण, सूअर, परिन्दे इत्यादि का ही शिकार करता होगा।

1. निम्न पुरापाषाण चरण के औजार।
2. मध्य पुरापाषाण चरण के औजार।
3. उच्च पुरापाषाण चरण के औजार।

(2) शिकारी - संग्रहक :→ पुरापाषाण काल में मनुष्य का जीवन शिकारी संग्रहक का था। आरम्भ में वह भोजन अथवा शिकार की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर अकेला भटकता रहता था। उसके समक्ष बहुत सी चुनौतियाँ थी वह जंगली पशुओं को पत्थर तथा हड्डियों आदि के हथियारों की सहायता से मार कर कच्चा मांस प्राप्त करके अपना पेट भर लेता था। आरंभ में वह अकेला शिकार करता था परंतु जंगल में हिंसक जानवरों का भय हमेशा बना रहता था वैसे भी वह अकेला भारी भरकम हिंसक पशुओं को नहीं मार सकता था अतः उसने टोलियाँ बनाकर शिकार करना आरंभ कर दिया था।

(3) खान - पान :→ जैसा कि पीछे वर्णन किया जा चुका है, पुरापाषाण काल में मानव भोजन की खोज में इधर - उधर भटकता रहता था इस काल में मनुष्य का प्रमुख उद्यम आखेट अथवा शिकार था वह पत्थर और जानवरों की हड्डियों के औजारों व हथियारों की सहायता से जंगली पशुओं का शिकार करता था तथा उनसे प्राप्त मांस को भोजन के रूप में प्रयोग करता था इन औजारों एवं हथियारों का मनुष्य को बहुत लाभ हुआ।

(4) निवास - स्थान :→ पूर्व पाषाण काल के आरंभिक युग में मनुष्य का अपना कोई घर नहीं था वह घर बनाने की कला से भी परिचित नहीं था वह खानाबदोश का जीवन व्यतीत करता था और जहाँ पर उसे शिकार या भोजन प्राप्त हो जाता वहीं पर उसका घर बन जाता था सूरज ढलते ही वह कहीं भी वृक्षों की ओट में आराम करके अपने शरीर की थकावट को दूर कर लेता था प्राकृतिक तकलीफों से बचने के लिए वह पहाड़ियों और वृक्षों के पीछे छुप जाता था धीरे-2 मनुष्य ने पर्वतों में गुफा बनाकर रहना

DELTA My NoteBook

आरंभ कर दिया था।

(5) सामाजिक संगठन :→ पुरापाषाण काल में मनुष्य अकेला रहता था यही कारण था कि वह आमतौर पर स्वयं हिंसक जानवरों का शिकार बन जाता था अतः मध्य पूर्वप्राचीन पाषाण काल में मनुष्य अपनी सुरक्षा के लिए टोलियाँ बनाकर रहने लगा अनुमान लगाया जाता है कि प्रत्येक टोली के सदस्य किसी एक मुखिया की अध्यक्षता में रहते होंगे टोली का मुखिया सबसे बड़ी उम्र वाला व्यक्ति होता था।

(6) वस्त्र :→ पूर्व पाषाण काल में मनुष्य अपने तन पर कोई वस्त्र धारण नहीं करता था क्योंकि उसमें अभी तक चेतना का विकास नहीं हो पाया था। वह पूरी तरह से नग्न रहता था परंतु जैसे जैसे मनुष्य में चेतना का विकास होता चला गया, वैसे-2 ही उसने अपने शरीर को वृक्षों की छाल, पत्तों तथा पशुओं की खाल से ढकना आरंभ कर दिया इतिहासकारों का मानना है कि सर्दी धूप की गर्मी तथा प्राकृतिक से अपने शरीर को बचाने के लिए मनुष्य ने प्रारंभिक वस्त्र धारण किए होंगे।

(7) आर्थिक विकास :→ प्राचीन पाषाण काल में मनुष्य को आर्थिक विकास के विषय में कोई जानकारी नहीं थी उसने भूमि और जंगलों पर अपना अधिकार नहीं किया था कृषि तथा पशु पालन का भी उसे ज्ञान नहीं था वह अकेला केवल मांस तथा फल संग्रह करना ही जानता था। वह वस्तु विनियम से भी परिचित नहीं था।

(8) कला का विकास :→ पुरा - पाषाण काल में मनुष्य चित्रकारी, नक्काशी तथा मूर्तिकला में भी रुचि लेने लगा था आरंभ में, वह औजारों को भद्दा तथा बेडौल बनाता था परन्तु बाद में उसने उन्हें छील कर तथा घिसा - घिसा कर चिकना बनाना आरंभ कर दिया था मध्य पूर्व पाषाण काल में मनुष्य ने गुफाओं पर भी चित्रकारी करनी आरंभ कर दी उनकी चित्रकला के उत्कृष्ट नमूने उत्तरी स्पेन में अल्तामिरा नामक स्थान पर बनी गुफाओं की छतों तथा दीवारों पर प्राप्त हुए हैं उनकी दीवारों पर जंगली भैंसे का चित्र है जो बैठी हुई मुद्रा में है

Date / / Page no.

(9) धार्मिक विकास :→ भारत के विभिन्न स्थानों पर कुछ गुफाओं में मानव के अस्थि-पिंजर के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के पत्थर के औजार तथा पशुओं की हड्डियाँ भी प्राप्त हुई हैं। जिनसे अनुमान लगाया जाता है कि मानव में धीरे-धीरे धार्मिक विश्वास उत्पन्न होता था ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्राचीन पाषाण काल में मनुष्य जादू-टोनों में भी विश्वास करने लगा था।

निष्कर्ष :→ उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि पूर्व पाषाण काल में मनुष्य का जीवन बहुत चुनौती भरा था अभी उसमें पूर्ण चेतना का विकास नहीं हुआ था। प्राकृतिक प्रकोपों एवं जंगली हिंसक जानवरों का भय उसे हमेशा बना रहता था। ऐसी स्थिति में पत्थर के औजार व हथियार ही उसके सुख-दुःख के साथी थे।

Date / / Page no.

प्रश्न→ नवपाषाण काल से क्या अभिप्राय है? इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ नव-पाषाण काल का युग 12000 वर्ष पूर्व से 6000 वर्ष पूर्व तक माना जाता है। कुछ इतिहासकार इसका काल 12000 ई.पू. से 4000 ई.पू. तक का मानते हैं। नवपाषाण काल की अवधारणा जान लुब्बाक ने 1865 ई. ने प्रस्तुत की। नियोलिथिक शब्द दो यूनानी शब्द नियो तथा लिथोस से मिलकर बना है जिसका अर्थ है - नवपाषाण। यह काल नये औजारों और शिकारी संग्रहकर्ताओं के जीवन में आए परिवर्तन का द्योतक है। गॉर्डन चाइल्ड ने अपनी पुस्तक 'मैन मेक्स हिमसेल्फ' में नवपाषाण काल को नव-पाषाण (शांति) क्रांति की संज्ञा दी है।

(1) कृषि का आरंभ :→ नव-पाषाण काल में मनुष्य ने कृषि करनी आरंभ कर दी। यह अनुमान लगाना कठिन है कि मनुष्य ने कृषि का आरंभ कैसे किया। ऐसा माना जाता है कि जब जलवायु में घोर परिवर्तन हो रहे थे तो जंगल समतल भूमि में परिवर्तित होते जा रहे थे। अब मनुष्य ने घास और फलों के बीज इकट्ठे करने आरंभ कर दिए थे। उसने इन बीजों

को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें अपने निवास स्थान के पास एक दिन भूमि में गड्ढा खोदकर दबा दिया वह ऐसा करके भूल गया। कुछ दिनों पश्चात् मनुष्य का उस समय आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा, जब उसने देखा कि बीज पौधे के रूप में उग आए हैं।

(2) पशु-पालन :→ नव पाषाण काल में कृषि के साथ-साथ पशु पालन भी आवश्यक हो गया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि मनुष्य ने सबसे पहले कुत्ते की उपयोगिता को समझते हुए इसे पालना आरंभ कर दिया इसके पश्चात् कुत्ते की सहायता से मनुष्य शिकार करने लगा कुत्ता मनुष्य की रात के समय हिंसक जानवरों से रक्षा भी करता था जब मनुष्य के घरों और खेतों के पास घूमने लगे तो उसने पशुओं के महत्व को भी जान लिया। ऐसा माना जाता है कि शुरु में मनुष्य ने जानवरों के बच्चों को अपने पास रखना आरंभ किया होगा।

(3) निवास-स्थान :→ नव-पाषाण काल में कृषि के आरंभ हो जाने से मनुष्य के इधर-उधर भटकने के दिन समाप्त हो गए, अब उसने स्थायी रूप से एक जगह रहना आरंभ कर दिया और मिट्टी तथा घास फूस की झोपड़ियाँ बनाकर रहने लगा, भारत से भी मेहरगढ़ आदि स्थानों से भी नव-पाषाण कालीन झोपड़ियाँ मिली हैं जिनसे अनुमान लगाया जाता है कि स्विट्ज़रलैंड से मनुष्य नदी के किनारे झोपड़ियाँ बनाकर रहता था।

(4) ग्राम्य जीवन का उदय :→ नव पाषाण काल में मनुष्य ने बस्तियां बनाकर गाँवों में निवास करना आरम्भ कर दिया था कृषि तथा पशुपालन से मनुष्य की भोजन के लिए शिकार पर निर्भरता कम हो गई। उसकी भोजन की आवश्यकता की पूर्ति कृषि तथा पालतू पशु पूरी कर देते थे अतः उसने अपने खेतों के पास ही घास-फूस तथा मिट्टी की झोपड़ियाँ बना ली। नव पाषाण कालीन खाद्य- उत्पादक की बस्तियाँ भारत तथा पश्चिमी एशिया से प्राप्त हुई हैं। इन स्थानों से मिले अवशेष लगभग 10000 वर्ष पुराने हैं, भारत में मेहरगढ़ नामक स्थान से 9000 वर्ष पहले की ग्रामीण बस्तियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

(5) खान-पान :→ कृषि के आरंभ हो जाने से नव पाषाण काल में मनुष्य ने अपने खेतों में अनाज व फल उगा कर खाना आरंभ कर दिया। पूर्व पाषाण काल में वह कच्चे मांस तथा जंगली फलों पर निर्भर रहता था, परन्तु अब उसने अनाज तथा फलों, मांस को आग में पकाकर खाना आरंभ कर दिया आरंभ में वह अनाज को भून कर खाता था धीरे -2 उसने अनाज को पीस कर उसकी चपातियाँ बनाकर खाना आरंभ कर दिया अब मनुष्य भोजन में गेहूँ, चावल, चना, मक्का, मटर, जौ तथा विभिन्न प्रकार की दालें, सब्जियाँ तथा फलों का प्रयोग करने लगा।

(6) पहिये का आविष्कार :→ नव-पाषाण काल में मनुष्य का सबसे क्रांतिकारी कदम पहिये का आविष्कार करना था। पहिये का आविष्कार हो जाने से वह चाक पर मिट्टी के बढ़िया प्रकार के बर्तन बनाने लगा। इन बर्तनों को वह आग मे पकाकर, बाद मे उन पर रंगो द्वारा बढ़िया प्रकार की नक्कासी करने लगा ऐसा माना जाता है कि पहले मनुष्य बर्तनों को पकाना नहीं जानता था एक दिन मनुष्य के हाथों से एक मिट्टी की कटोरी आग में गिर गई जब कुछ देर बाद उसने देखा कि वह कटोरी आग में पक-कर कठोर हो गई है तो उसने मिट्टी के बर्तनों को पकाना आरंभ कर दिया था।

(7) उद्योगों का विकास :→ पहिये के आविष्कार के पश्चात् मनुष्य ने विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को अपनाना आरंभ कर दिया चाक की सहायता से वह मिट्टी से विभिन्न प्रकार के सुंदर-सुंदर बर्तन जैसे → घड़े, मटके, कटोरियाँ, तश्तरियाँ, गिलास आदि बनाता था मिट्टी के बर्तनों को आग में पकाकर उन पर सुंदर रंगों की चित्रकारी की जाती थी इसके अलावा वह लकड़ी की बैलगाड़ियाँ भी भारी मात्रा में बनाने लगा। इस प्रकार मिट्टी के बर्तन तथा लकड़ी के समान के उद्योग प्रकाश में आने लगे। धीरे-धीरे मनुष्य ने खेतों में जूट तथा कपास आदि फसलों को बोना आरम्भ किया, जिससे वस्त्र उद्योग प्रकाश में आया। पश्चिमी एशिया के अनेक देशों के प्राचीन ग्रामों से हमें बहुत से प्रमाण मिले हैं कि नव-पाषाण काल में मनुष्य ने तकली तथा तकुओं बुनाना आरंभ कर दिया

Date / / Page no.

(8) हथियार तथा औजार :→ नव पाषाण काल में हमें पत्थर और हड्डियों के अच्छे प्रकार के औजार तथा हथियार प्राप्त हुए हैं। इस युग में पत्थर के बहुत अच्छे उपकरण बनाये जाते थे कृषि के कार्यों में भी लकड़ी और पत्थर औजारों का प्रयोग किया जाता था मनुष्य हल, दरांती, कुल्हाड़े, हसिया, चाकू तथा छुरे आदि बनाता था इनके अलावा वह खुर्पी, कुदाल, छैनी तथा चक्की भी बड़ी मात्रा में उत्पादित करता था।

(9) व्यापार तथा वाणिज्य :→ नवपाषाण काल में मनुष्य की चेतना में विकास के साथ - साथ उसकी इच्छाएं भी बढ़ने लगी, उसने अपनी आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना आरंभ कर दिया। संपत्ति तथा परिवार के प्रति उसका लगाव अर्थात् प्रेम भी बढ़ गया मनुष्यों के एक स्थान पर निश्चित रूप से निवास करने के कारण जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। इसलिए वह बर्तन, बैलगाड़ी, कपड़ा, नाव, आभूषण, औजार तथा लकड़ी का सामान आदि।

Date / / Page no.

(10) राजनीतिक संगठन :→ नव पाषाण काल में जब मनुष्य ने अपना स्थाई निवास बनाया तो परिवार, गोत्र तथा समाज का उत्थान हुआ, कालान्तर में मनुष्यों ने भूमि पर भी अपना स्वामित्व जमा कर अपने-अपने कबीले स्थापित कर लिए। प्रत्येक कबीले का अपना चिह्न होता था कबीले का सबसे बड़ी उम्र वाला व्यक्ति मुखिया कहलाता था।

(11) धार्मिक विश्वास :→ नव पाषाण काल में मनुष्य के धार्मिक विचारों में भी परिवर्तन आया, मिस्र, सीरिया, ईरान, भारत, दक्षिणी यूरोप आदि स्थानों पर स्त्रियों की कुछ पत्थर की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। इन मूर्तियों को देखकर अनुमान लगाया जाता है कि ये मूर्तियां उस समय पूजा करने के काम आती थी कुछ स्थानों पर मानव अस्थि पिंजर के पास हथियार तथा पत्थर की मूर्तियां आदि प्राप्त हुई हैं। शायद नव पाषाण कालीन लोग मृत्यु के पश्चात् शवों को भूमि में दबाते होंगे। उस समय लोगों में पुनर्जन्म का विश्वास जाग्रत होने लगा था। वे लोक व परलोक की भी कामना करने लगे थे।

(12) **कला** :→ नव-पाषाण काल में कला का भी बहुत विकास हुआ। पहिये की खोज हो जाने से मनुष्य चाक की सहायता से बढ़िया प्रकार के सुंदर-सुंदर बर्तन बनाने लगा और इन बर्तनों को आग में पकाकर उन पर बढ़िया प्रकार से पशु-पक्षियों, फूल-पत्तों के चित्र बनाकर उस पर नक्काशी करता था। इस समय मनुष्यों की मूर्तियाँ भी काफी मात्रा में बनाई जाती थी।

निष्कर्ष :→ उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि नव-पाषाण काल मनुष्य के जीवन का एक क्रांतिकारी काल था। मनुष्य ने इस काल में अनेक खोजें की। इन्हीं खोजों के बल पर उसने अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर किया। आज भी मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

प्र०→ सुमेर के नगर राज्यों के उदय पर प्रकाश डालिए?

उत्तर→ **भूमिका** :→ प्राक-प्रलयकालीन सुमेरियन राज्यों में ऐरिडू, बैद लिबिरा लरक, सिप्पर और शुरुप्पक राज्यों का उल्लेख मिलता है। इनमें सबसे प्राचीन राज्य ऐरिडू था, जहाँ एलुलीम तथा अलल्गर जैसे शासकों ने शासन किया। इन्होंने 28800 वर्ष तथा 36000 वर्ष शासन किया उनके दो उत्तराधिकारियों ने 10800 वर्ष शासन किया इसके पश्चात् लरक के एक राजा ने 28000 वर्ष तक, सिप्पर के एक राजा ने 21000 वर्ष तथा शुरुप्पक के एक राजा ने 18800 वर्ष तक राज्य किया इसके पश्चात् महाप्रलय से समस्त नगर नष्ट हो गए,

जैसा कि पीछे वर्णन किया जा चुका है कि 3200 ई.पू. से हमें सुमेर के नगर-राज्यों का लिखित राजनीतिक इतिहास मिलने लगता है। खुदाई से प्राप्त अभिलेखों से जानकारी मिलती है कि जल प्रलय के पश्चात सुमेर में क्रमशः किश, एरेक तथा उर नगर राज्यों का उत्थान हुआ किश नगर का राज्य प्रभुत्व 2400 वर्ष और एरेक का 2000 वर्ष तक चला था उर नगर

राज्य में चार राजाओं ने 177 वर्षों तक शासन किया इसको 'उर का प्रथम वंश' तथा सुमेर का प्रथम ऐतिहासिक वंश कहा जाता है। किश के प्रथम राजा का नाम उत्तु था वह 3200 ई. पू. में गद्दी पर बैठा था।

2850 ई. पू. में एरेक राज्य का उत्कर्ष हुआ, इस नगर राज्य को उम्मा के नाम से भी जाना जाता है। इसके शासक का नाम लूगल जग्गिसी था उसने 2400 ई. पू. से 2371 ई. पू. तक शासन किया उसके शासन काल में सुमेर व अक्कद का नेतृत्व इस नगर के हाथों में चला गया था। लूगल जग्गिसी ने काफी सफलताएं प्राप्त की है।

1. अक्कद में सेमाइयों का उदय :→ सेमाइट अर्थात् सेमेटिक कौन थे? इस विषय पर इतिहासकारों में मतभेद हैं मेसोपोटामिया के निवासियों और सेमेटिक लोगों के संबंध के विषय में यह पता चलता है कि सेमेटिक लोग अफ्रीका के मूल निवासी थे प्रो० हिट्टी ने भी मेसोपोटामिया को सेमाइयों का मूल निवास स्थान नहीं माना है कुछ इतिहासकारों का मानना है कि प्राचीन काल में अरब के रेगिस्तान से इन

लोगों ने पलायन करना आरंभ किया था यही कारण था कि इनकी और अरबों की बहुत-सी विशेषताएं आज भी आपस में मेल खाती हैं अतः सेमेटिक एक खाना-बदोश जाति थी जो अरब के रेगिस्तान में निवास करती थी जब सुमेरियन लोगों ने दजला तथा फुरात की घाटी में बसना आरंभ किया तो सेमेटिक भी यहाँ आकर बसने लगे। किश नगर राज्य के नेतृत्व में सेमेटिक लोगों ने बहुत उन्नति की।

(2) सारगोन प्रथम :→ सारगोन प्रथम अक्कद में सेमाइयों के राज्य का संस्थापक था उसे सेमेटिक वंश के इतिहास में 'राष्ट्रीय वीर शासक' के रूप में जाना जाता है परन्तु आधुनिक अनुसंधानों से पता चलता है कि शर्रूगी या शर्रूकिन सेमेटिक वंश का प्रथम शासक था कुछ विद्वानों ने सारगोन प्रथम का शासन काल 2371 ई० पू० से 2316 ई० पू० तक बताया है जबकि अन्य इतिहासकार सारगोन प्रथम और शर्रूगी को एक ही शासक मानते हैं किंग नामक इतिहासकार के अनुसार शर्रूगी तथा सारगोन प्रथम दोनों अलग-अलग व्यक्ति थे शर्रूगी के दो पुत्र थे उन्होंने एलम पर विजय प्राप्त करके अक्कद को विशालता एवं सुदृढ़ता

Date / / Page no.

प्रदान की। उसके पश्चात् 2800 ई.पू. में सारगोन प्रथम अक्कद का शासक बना। उसने बेबीलोन पर अधिकार किया। वह प्राचीन विश्व के इतिहास में एक महान् शासक माना जाता है।

सारगोन प्रथम एक महान् विजेता के साथ-साथ एक कुशल शासक प्रबंधक भी था उसने अक्कद को अपनी राजधानी बनाया। उसने प्रशासन के विभिन्न पदों पर सेमाइट लोगों को नियुक्त किया। उसने अपने साम्राज्य के कोने-कोने से सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए गुप्तचर प्रणाली का गठन किया, उसने युद्धों में काफी संख्या में लोगों को गुलाम बनाया। सारगोन प्रथम ने अपने साम्राज्य की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए भी अनेक कार्य किए तथा सुमेर व अक्कद में अनेक राजमहलों तथा मन्दिरों का निर्माण कराया। उसके शासन काल में शिक्षा साहित्य तथा कला का भी बहुत विकास हुआ, उसकी राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक सफलताओं के आधार पर ही उसके युग को सारगोन का युग कहकर पुकारा जाता है 2316 ई.पू. में उसकी मृत्यु हो गई।

Date / / Page no.

(3) <u>सारगोन के उत्तराधिकारी</u> :→ सारगोन की मृत्यु के पश्चात् उसके तीन पुत्र रिमुश, मेनिश्तशु तथा नरामसिन एक के बाद एक गद्दी पर बैठे। सारगोन का तीसरा पुत्र नरामसिन इस वंश का दूसरा सबसे शक्तिशाली शासक था। उसने 2291 ई.पू. से 2255 ई.पू. तक शासन किया उसने भी अनेक विजयें प्राप्त की। उसने एक युद्ध में लुल्लुबी के शासक सतुनी को पराजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने नरामसिन-पाषाण नामक स्मारक बनवाया। यह स्मारक कला की दृष्टि से बहुत सर्वोत्तम माना जाता है। नरामसिन ने मेसोपोटामिया के उत्तर पूर्व के प्रदेशों और पूर्वी अरब पर भी विजय प्राप्त की।

(4) <u>उर का तृतीय राजवंश</u> :→ सेमाइयों के पतन के पश्चात् सुमेर और अक्कद का नेतृत्व लगश नगर राज्य ने किया लगश के लोग अपने राजा को पटेशी कहते हैं। लगभग 2250 ई.पू. में लगश का पटेशी गूढ़ी था। उसने एलम नगर पर अधिकार किया, वह धार्मिक कार्यों, न्यायप्रियता, भवन निर्माण आदि में बहुत रुचि लेता था। वह अपनी उदारता के लिए भी बहुत प्रसिद्ध था। गूढ़ी की मृत्यु के पश्चात्

Date / / Page no.

लगश का महत्व कम हो गया और उसके स्थान पर उर नगर राज्य का उत्थान हुआ।

उर के तृतीय राजवंश का शक्तिशाली शासक डुंगी या शुल्गी था। उसने 2095 ई. पू. से 2048 ई. पू. तक शासन किया था उसने बेबीलोनिया को विजित किया, उसने गन्हर, सिमुरुम, दिलमुन और अद्मदुन आदि प्रदेशों पर अधिकार करके अपने राज्य को कुर्दिस्तान तक फैलाया। डुंगी की पत्नी का नाम शुकुला था। इसके अतिरिक्त उसने 'उर नरेश' और 'चतुर्दिक का स्वामी' की उपाधियाँ भी धारण की।

डुंगी की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर बैठने वाले उसके सभी उत्तराधिकारी अयोग्य निकले, जिसके परिणामस्वरूप उर नगर राज्य का महत्व समाप्त हो गया। लगभग 300 वर्षों तक सुमेर व अक्कद में अराजकता का वातावरण बना रहा उसके उत्तराधिकारियों में अमर सिन, शुसिन, इब्बीसिन तथा इब्बी इर्रा ने उर नगर राज्य पर शासन किया। इसके पश्चात् उर नगर राज्य का पतन हो गया और एलम का महत्व बढ़ गया।

Date / / Page no.

निष्कर्ष :→ अतः सुमेर सभ्यता विश्व की प्राचीन कांस्ययुगीन सभ्यताओं में अपना एक विशेष स्थान रखती है। पश्चिम एशिया में सुमेर के लोगों को सभ्यता का जनक माना जाता है। इस सभ्यता के विकास का श्रेय सुमेरियन लोगों को ही जाता है।

Date / . / Page no.

प्रश्न→ सुमेर सभ्यता के संगठन में राज्य के सामाजिक और धार्मिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर→ भूमिका :→ सुमेर के लोगों ने प्राचीन काल में एक उच्चकोटि की सभ्यता की नींव रखी। जिसे सुमेरियन सभ्यता के नाम से जाना जाता है। इस सभ्यता के लोगों ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की। इस सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थी।

सुमेरियनों का राजनीतिक जीवन :→ सुमेरियन राजनीतिक संगठन नगर-राज्यों का एक ढीला एवं शिथिल संघ था इस संघ के राज्य केवल युद्धों में ही परस्पर संगठित होते थे। ऐसे समय पर राजा कुछ लोगों से सलाह लिया करते थे। ये लोग सामूहिक रूप से अपनी समस्याओं का निपटारा करते थे।

① पटेशी या राजा :→ प्राचीन काल में सुमेर छोटे-छोटे नगर राज्यों में बंटा हुआ था प्रत्येक नगर राज्य में एक या दो कस्बे या गाँव होते थे।

(2) सैनिक संगठन।
(3) न्याय प्रणाली।
(4) कर।

सामाजिक जीवन

① समाज में तीन वर्ग :→ प्राचीन सुमेरियन समाज आर्थिक आधार पर तीन वर्गों में बंट हुआ था

(i) उच्च वर्ग (2) मध्य वर्ग (3) निम्न वर्ग। सुमेरियन समाज में प्रथम वर्ग, उच्च वर्ग कहलाता था जिसमें राजा, पुरोहित, बड़े-2 राज्याधिकारी आते थे इस वर्ग के लोग वैभावपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे समस्त सामाजिक एवं राजनीतिक शक्तियां उनके पास थी। समाज में राजा को देवता माना जाता है। सुमेरियन समाज में राजा के बाद सामाजिक दृष्टि से पुरोहित का बड़ा महत्व था। दूसरा वर्ग मध्य वर्ग कहलाता है। जिसमें स्वतंत्र नागरिकों की गणना होती थी। समाज का तीसरा वर्ग निम्न वर्ग था। जिसमें छोटे-छोटे कृषकों तथा दासों को शामिल किया जाता था। कानून की नजर में सभी समान नहीं थे।

(2) परिवार :→ सुमेर का समाज पितृ-सत्तात्मक था। परिवार में पिता का स्थान सर्वोपरि होता था। वह अपने पुत्रों को घर से बाहर निकाल सकता था और बेच सकता था। उसे अपनी पुत्रियों को देवालयों में देव-दासियों के रूप में देने का अधिकार था। पिता का संपत्ति पर पूरा अधिकार होता था। वह अपनी पत्नी को भी बेच सकता था। बच्चों के विवाह उसी के द्वारा किये जाते थे।

(3) स्त्रियों की स्थिति :→ प्राचीन सुमेरियन समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी वे स्वतंत्र रूप से कोई भी कार्य कर सकती थी पति की मृत्यु हो जाने पर स्त्री को दोबारा विवाह करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्त्री के चरित्रहीन होने पर भी उसे तालक नहीं दिया जा सकता था हालांकि पुरुष दूसरा विवाह कर लेता था उस समय रखैल प्रथा भी प्रचलित थी। रखैल के पुत्र को भी वैध माना जाता था। यदि कोई स्त्री पुत्र उत्पन्न करने को मना करती तो उसे डूबो दिया जाता था।

(4) रहन-सहन तथा पहनावा :→ सुमेर सभ्यता में लोगों का जीवन-स्तर बहुत ऊँचा था उच्च वर्ग के लोग वैभवशाली जीवन व्यतीत करते थे वे भव्य महलों में रहते थे उनके भोजन तथा खाद्यान्न पदार्थों में भी विलासिता देखने को मिलती थी।

(5) आभूषण तथा श्रृंगार :→ सुमेरियन समाज में आभूषण पहनने का शौक स्त्री पुरुष दोनों को था। खुदाई में अनेक प्रकार के आभूषण जो नाक, कान, पैर, हाथ, गले, कमर आदि में पहने जाते थे प्राप्त हुए हैं।

(6) मनोरंजन :→ सुमेर के लोग विभिन्न प्रकार के साधनों से मनोरंजन करके अपना दिल बहलाते थे खेल-कूद, संगीत, नृत्य तथा उत्सव व त्यौहार उनके मनोरंजन के प्रमुख साधन थे मन्दिरों में देवदासियाँ लोगों का मनोरंजन करती थी।

(7) दास प्रथा :→ सुमेरियन समाज में दास प्रथा भी जोरों पर प्रचलित थी दासों को दूसरे देशों से युद्ध में बंदी बनाकर लाया जाता था। उस समय भयंकर अपराध, कर्ज और विवशता जैसे तथ्य भी दास प्रथा को बढ़ावा देते थे।

आर्थिक जीवन → (1) कृषि (2) पशु-पालन (3) उद्योग (4) व्यापार तथा वाणिज्य।

धार्मिक जीवन :→ सुमेर के लोगों को धर्म से बहुत विश्वास था इनमें धार्मिक भावना के विकास का कारण भय, कल्पना और विश्वास था वे जिन वस्तुओं से डरते थे, उन्हें दैवीय स्वरूप प्रदान कर देते थे और जिस पर वे विश्वास करते थे उनको काल्पनिक देवताओं का रूप देते थे उन्होंने कल्पना की थी कि आरम्भ में दो देवता थे जो परस्पर इकट्ठे रहते थे।

(1) विभिन्न देवताओं की पूजा :→ सुमेर के लोग विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना करते थे। प्राचीन सुमेर के सभी नगर-राज्यों में अलग-अलग देवता होता था सुमेर के लोगों का विश्वास था कि आदिकाल में जल ही जल था। सुमेर निवासियों ने उसकी कल्पना नम्मू देवी से की जिसने पृथ्वी, आकाश तथा पर्वतों की रचना की थी। उनका विश्वास था कि व्यक्ति के प्रत्येक कार्य में किसी न किसी देवता का हाथ अवश्य होता है।

(2) मन्दिर तथा पुजारी वर्ग :→ सुमेर के राजाओं ने देवताओं की उपासना के लिए अनेक मन्दिरों का निर्माण कराया। बेबीलोन के विभिन्न नगरों में 53 से अधिक मन्दिर थे निप्पुर नगर में एनलिल तथा लगश नगर में शमश देवता के मन्दिर सुप्रसिद्ध थे उस समय मन्दिरों को जिगुरात कहा जाता था। मन्दिर ऊँचे मीनार की शक्ल में बनाए जाते थे जो दो या तीन मंजिल ऊँचे होते थे।

(3) मृतक संस्कार :→ सुमेर के लोग विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वासों में विश्वास रखते थे। मन्दिरों में पशुओं की बलियाँ दी जाती थी तथा अनेक प्रकार के चढ़ावे चढ़ाए जाते थे। लोगों का विश्वास था कि किसी भी तरह की बीमारियाँ तथा प्रलय आदि आने का मुख्य कारण देवताओं की नाराजगी होती है।

सांस्कृतिक जीवन → सुमेर में शिक्षा, साहित्य, कला और विज्ञान का भी बहुत विकास हुआ, जिसका वर्णन इस प्रकार है।

(1) शिक्षा तथा साहित्य।

Date / / Page no.

(2) शिक्षा ।
(3) साहित्य ।
(4) गणित ।
(5) ज्योतिष ।
(6) खगोल तथा चिकित्सा शास्त्र ।
(7) कला ।

निष्कर्ष :→ अतः सुमेर सभ्यता विश्व की प्राचीन कांस्ययुगीन सभ्यताओं में अपना एक विशेष स्थान रखती है। पश्चिम एशिया में सुमेर के लोगों को सभ्यता का जनक माना जाता है। इस सभ्यता की विकास का श्रेय सुमेरियन लोगों को ही जाता है। वुली ने लिखा है "वह काल बीत चुका जब समझा जाता था कि यूनान ने संसार को ज्ञान सिखाया।

Date / / UNIT-II Page no.

प्रश्न → रोमन सभ्यता की विशेषताएं सामाजिक तथा आर्थिक जीवन बताइए?

उत्तर → भूमिका :→ इटली जहां रोमन सभ्यता का उदय हुआ यूनान के पश्चिम में स्थित है। रोम नगर इस सभ्यता का मुख्य केन्द्र रहा। इस नगर की स्थापना रोमलस तथा रीमस नामक दो भाइयों ने की थी कुछ विद्वानों के अनुसार रोम नगर की स्थापना ट्रोजन युद्ध के विजेता इनीज के पुत्र इनीज सिलवियस ने की। ऐसा माना जाता है कि रोम नगर की स्थापना 753 ई. पू. में की गई रोम नगर भौगोलिक दृष्टि से बहुत सुरक्षित था इसलिए कालान्तर में रोम ने एक विशाल साम्राज्य का रूप धारण कर लिया। चूंकि रोम में लोहे का प्रयोग बहुत बड़ी मात्रा में किया जाता था। इसलिए इस सभ्यता को लौहकालीन सभ्यता भी कहकर पुकारा जाता है। इस सभ्यता ने राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक, धार्मिक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की। रोम के लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार से किया गया है।

Date / / Page no.

सामाजिक जीवन :→ रोम के लोगों के सामाजिक जीवन की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थी।

1. सामाजिक विभाजन :→ लौहकालीन रोमन समाज मुख्य रूप से तीन वर्गों में बंटा हुआ था - उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग तथा दास वर्ग।

(i) उच्च वर्ग :→ रोम के उच्च वर्ग में राजा, राजपरिवार के लोग, कुलीन, बड़े-बड़े व्यापारी तथा साहूकार लोग आते थे इन लोगों को पैट्रिशियन कहा जाता था रोम की समस्त शासन प्रणाली पर इनका अधिकार था प्रशासन के उच्च पदों पर इसी वर्ग के लोगों को ही नियुक्त किया जाता था।

(ii) मध्यम वर्ग :→ इस वर्ग में स्वतंत्र किसान मजदूर, शिल्पकार, शिक्षक, पुजारी आदि आते थे इस वर्ग के लोग प्लीबियन के नाम से जाने जाते थे आरंभ में इन्हें रोमन समाज मे किसी भी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे, परन्तु 12 तख्तियों के कानून के अनुसार इन्हें भी कुछ सामाजिक अधिकार प्राप्त थे।

Date / / Page no.

(iii) दास वर्ग :→ लौहकालीन रोमन समाज में तीसरा वर्ग दासों का था इनकी संख्या बहुत अधिक थी। इनमे से अधिकतर दास युद्धों में बंदी बनाकर लाए जाते थे प्रत्येक नागरिक अपने पास ज्यादा से ज्यादा संख्या में दास रखता था उस समय एक आम नागरिक के पास भी सात-आठ दास होते थे।

(2) पारिवारिक संगठन :→ रोमन समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार थी उस समय के परिवार पितृ प्रधान होते थे परिवार का मुखिया पिता या सबसे बड़ी उम्र का व्यक्ति होता था। परिवार के मुखिया का अपने पुत्र, पुत्री तथा स्त्री का पूर्ण अधिकार होता है यहाँ तक कि वह अपनी संतान का वध भी कर सकता था परिवार की समस्त संपत्ति पर उसका अधिकार होता था।

(3) स्त्रियों की दशा :→ लौह कालीन रोमन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी यद्यपि रोमन समाज पितृ प्रधान था और स्त्रियों के अधिकार कानून के द्वारा रक्षित नहीं थे, फिर भी परिवार में स्त्रियों का बहुत सम्मान किया

जाता था रोमन समाज में विवाह का उद्देश्य पुत्र उत्पन्न करना माना जाता था बच्चे के पैदा होने के आठवें दिन महिला को परिवार में शामिल किया जाता था रोमन माताएं स्वयं अपने बच्चे का पालन-पोषण करती थी सम्पत्ति पर भी स्त्रियों का पूर्ण अधिकार होता था। उस समय समाज मे पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी। स्त्रियाँ सभी धार्मिक कार्यों मे भी भाग लेती थी।

(4) भोजन :→ रोमन लोग गेहूँ, चावल, चना, मक्का, दालें, सब्जियाँ तथा फलों का प्रयोग भोजन के रूप में करते थे उच्च वर्ग के लोग स्वादिष्ट एवं विलासप्रिय भोजन का प्रयोग करते थे वे अपने भोजन मे शराब, मांस तथा पनीर का प्रयोग करते थे।

(5) पहनावा :→ रोमन लोग भड़कीले वस्त्र धारण करते थे, उनके वस्त्र ऊनी तथा सूती दोनों प्रकार के होते थे उनके वस्त्र कुछ-2 यूनान के लोगों के वस्त्रों से मेल खाते थे स्त्री तथा पुरुष दोनों एक चादर सी ओढ़ते थे जिनके किनारे रंगीन होते थे।

(6) आभूषण तथा शृंगार :→ लौहकालीन रोमन समाज में आभूषण पहनने तथा शृंगार करने का शौक स्त्री पुरुषों दोनों को ही था। उस समय आभूषण सोने, चाँदी, हाथी दांत तथा बहुमूल्य पत्थर के बनाए जाते थे आरम्भ में रोमन लोगों द्वारा शृंगार इत्यादि पर बल नहीं दिया जाता था, परन्तु जैसे-जैसे रोमन समाज में विलासिता आती चली गई वैसे-वैसे ही स्त्रियों तथा पुरुषों ने शृंगार करना आरम्भ कर दिया। स्त्रियाँ अपने को पुरुषों से अधिक सुंदर दिखाने का प्रयास करती थी।

(7) मनोरंजन :→ लौहकालीन रोमन लोग विभिन्न साधनों से अपना मनोरंजन करते थे वे पशु युद्ध, पशु दौड़, शिकार, कुश्ती आदि खेलकर अपना मनोरंजन करते थे। कुछ लोग गीत, संगीत तथा नृत्य से भी अपना मनोरंजन करते थे। साम्राज्य काल मे रोमन समाज मे दरबारी कवि, गायक तथा नृतकियां आदि भी लोगों का मनोरंजन करते थे रोमन लोग अपने बच्चों को घुड़सवारी तथा तलवारबाजी सिखाकर उनका मनोरंजन करते थे कुछ लोग तलवार बाजी में बहुत अधिक रुचि लेते थे।

Date / / Page no.

आर्थिक जीवन :→ लौह कालीन रोमन समाज में लोगों के आर्थिक जीवन की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थी।

(1) कृषि :→ रोमन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना था रोम में खेती का कार्य पुरुष, स्त्रियां, लड़के तथा लड़कियाँ मिलकर करते थे रोमन लोगों के खेत चौकोर होते थे प्रत्येक किसान के पास लगभग तीन -चार एकड़ भूमि होती थी प्राचीन काल मे युद्धों के द्वारा जीती गई भूमि पर भी कृषकों का अधिकार माना जाता था परन्तु साम्राज्य काल में भूमि पर बड़े - बड़े जमीदारों का अधिकार हो गया था।

(2) पशुपालन :→ लौह काल में रोमन साम्राज्य में पशुओं का बहुत आर्थिक महत्व था। रोमन समाज में पशुओं की संख्या तथा कृषि से ही लोगों की आर्थिक स्थिति आँकी जाती थी इसलिए कृषि के साथ-साथ रोमन लोगों का मुख्य दूसरा व्यवसाय पशुपालन बन गया था। रोम मे गाय, भैंस, घोड़ा, मुर्गी, बकरी, सुअर तथा कुत्ता आदि पशु बहुत

Date / / Page no.

संख्या में पाले जाते थे।

(3) उद्योग :→ प्राचीन काल में लौहे के प्रयोग से रोमन साम्राज्य मे भारी संख्या मे उद्योग तथा दस्तकारियाँ स्थापित हो गई थी इटली में लोहा, ताँबा, टिन, जस्ता बहुत मात्रा मे पाया जाता था हालांकि सोना और चाँदी जैसी धातुएं वहाँ बहुत कम मात्रा में मिलती है। खानों से खनिज पदार्थ प्राप्त करने के लिए दासों को काम पर लगाया जाता था। रोम में धातुओं से विभिन्न प्रकार के उपकरण तथा आभूषण बनाए जाते थे, नगरों मे सूत कातना और ऊन बनाना, कपड़ा बनाना तथा कपड़ों को रंगने का कार्य बहुतायत मात्रा मे किया जाता है।

(4) व्यापार :→ रोमन साम्राज्य में आन्तरिक तथा बहा व्यापार जोरों पर प्रचलित था रोमन साम्राज्य मे बड़े-बड़े नगर थे जिसमे बहुत मात्रा में तैयार किया गया हुआ माल बेचा जाता था। रोमन सम्राटों ने आंतरिक व्यापार की उन्नति के लिए प्रमुख नगरों मे अनेक सड़कों का निर्माण कराया गया, जो एक नगर से दूसरे नगर को जाती थी। रोमन व्यापारी मिस्त्र से ऊन

DELTA My NoteBook DELTA My NoteBook

Date / / Page no.

ग्लास तथा मखमल के कपड़े, एशिया माइनर से लोहा, यूनान से संगमरमर तथा जैतून का तेल, ब्रिटेन से पशुओं की खाल के वस्त्र आदि खरीदकर एक नगर से दूसरे नगर में बेचते थे।

निष्कर्ष :→ इस प्रकार रोम के लोग बहुदेववादी थे प्रत्येक कुल या घर का अपना अलग देवता होता था। समाज में मूर्ति पूजा, पशु बलि, बाह्याडम्बरों तथा जादू टोनों इत्यादि का बोलबाला था।

Date / / Page no.

प्रश्न → सामंतवाद के उदय के कारण तथा विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर → भूमिका :→ यूरोप में सामन्तवाद के उदय में राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक कारणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी सामन्तवाद के उदय के मुख्य कारण इस प्रकार थे।

(I) राजनीतिक कारण

(i) केन्द्रीय शक्ति का पतन :→ सामन्तवाद के उदय का सबसे महत्वपूर्ण कारण केन्द्रीय शक्ति का पतन था। रोमन सम्राट शार्लमाँ की मृत्यु के पश्चात् केन्द्रीय शक्ति का अंत हो गया। उसके उत्तराधिकारी आपसी युद्धों में ही उलझे रहे जिसके परिणामस्वरूप समस्त रोमन साम्राज्य जर्मनी, इटली तथा फ्रांस आदि स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गया। इसके पश्चात् रोमन शासक इतना निर्बल हो गया कि वह अपने राज्य की सुरक्षा करने में पूर्णतया असफल रहा। इसी समय स्लाव तथा स्पेन के मूर लोगों ने आक्रमण आरंभ कर दिए, जिनसे यूरोप की स्थिति और भी अधिक बदतर हो गई। निर्बल शासक विद्रोही राज्यों पर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सके। दूसरी ओर बर्बर लोगों के आक्रमणों ने इटली, स्पेन, फ्रांस जैसे समृद्धशाली था।

(2) अराजकता एवं अशान्ति :→ मध्यकालीन यूरोप में रोमन साम्राज्य आंतरिक अशान्ति तथा विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गया। ये स्वतंत्र राज्य आपसी संघर्षों में उलझे रहते थे। जिससे यूरोप में अशांति तथा अराजकता का वातावरण उत्पन्न हो गया। बर्बर जातियों के आक्रमणों से कृषक तथा दासों की स्थिति और भी ज्यादा बदतर हो गई। वे अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगे। इस काल में जनसाधारण जनता को अपने जान-माल का खतरा सदैव बना रहता था।

(3) न्याय प्रबन्ध :→ शार्लमाँ की मृत्यु के पश्चात क्षेत्रीय शासकों तथा जमींदारों ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता सत्ता स्थापित कर ली। ये स्वतंत्र शासक अपने-अपने राज्यों में सम्राट की सभी प्रकार की शक्तियों का प्रयोग करते थे। इन्होंने अपने राज्यों या जागीरों में शक्तिशाली वर्ग बना लिये वे सेना की स्वयं भर्ती करते थे और अपने से छोटे शासकों तथा जमींदारों से सैनिक सहायता प्राप्त करते थे। वे अपने को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए दूसरों पर आक्रमण करते थे।

(4) सैनिक सहायता :→ यूरोप की समस्त भूमि का स्वामी सम्राट होता था वह अपने साम्राज्य की भूमि को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करके अपने खास अर्थात निकटतम लोगों में बाँट देता था। यह भूमि का टुकड़ा जिसे फीफ कहा जाता था का वितरण होमेज उत्सव में करता था। भूमि प्राप्त करने वाला व्यक्ति लार्ड कहलाता था। वह राजा को अशक्ति तथा युद्धों के समय सैनिक सहायता देता था। जब तक रोमन सम्राट शक्तिशाली रहे तब तक यह व्यवस्था ठीक प्रकार से कार्य करती रही।

(5) जर्मन लोगों द्वारा भूमि का विभाजन :→ रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात जर्मन कबीले, जिनमें गौथ, वांडाल तथा फ्रैंक लोग महत्वपूर्ण थे, चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य में प्रवेश किया। अतिशीघ्र ही उन्होंने फ्रांस, स्पेन, इटली, रोम आदि स्थानों पर अधिकार कर लिया, ये लोग युद्धों के द्वारा जीती हुई भूमि को अपने निकटतम लोगों में विभाजित कर देते थे, भूमि प्राप्त करने वाले इन शक्तिशाली लोगों को नाइट कहकर पुकारा जाता था। नाइट एक प्रकार के सामंत ही होते थे।

DELTA My NoteBook

Date / /

2 सामाजिक जीवन :→ सामंतवाद के उदय में सामाजिक कारणों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ० बालमुकुन्द बिरोत्तम के अनुसार व्यक्तिगत कारणों से ही सामंतवादी व्यवस्था प्रकाश में आई।

① पेट्रोसिनियम प्रथा :→ पेट्रोसिनियम प्रथा के अनुसार सामन्त या कोई धनी तथा प्रभावशाली व्यक्ति संरक्षक बनकर अपने अनुयायियों का एक बड़ा दल तैयार करता था हालांकि इस प्रथा में भूमि का होना जरूरी नहीं था। कोई भी व्यक्ति इस दल में शामिल हो सकता था। अराजकता के युग में छोटे कृषकों, भूमिहीन मजदूरों तथा कारीगरों को भी अपनी सुरक्षा की चिंता होने लगी। अतः वे भी किसी शक्तिशाली भूमिपति के पास जाकर अपनी निष्ठा अथवा स्वामि-भक्ति प्रकट करने लगे।

② प्रिकेरियम प्रथा :→ प्रिकेरियम प्रथा का संबंध भूमि के टुकड़े से था। जिनको प्राप्त करके पादरी लोग भी बड़े-बड़े सामंत बन गए। इसका कारण था। कि मध्यकालीन यूरोपीय समाज में अराजकता, असुरक्षा, आर्थिक संकट तथा सामाजिक दबाव के परिणाम

कृषक तथा कारीगर वर्ग अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगा। अतः अपनी सुरक्षा के लिए छोटे किसानों ने अपनी भूमि पर किसी बड़े जमींदार का स्वामित्व अर्थात संरक्षण स्वीकार कर लिया। यद्यपि भूमि पर उसका मालिकाना हक बना रहा। परन्तु कालान्तर में बड़े-बड़े जमीदारों ने उनकी भूमि पर स्थायी अधिकार कर लिया। अब जमींदार अपनी इच्छानुसार अधीन स्थ व्यक्ति को भूमि के मालिकाना हक से वंचित कर सकते थे।

③ कमेन्डेसन प्रथा :→ रोमन समाज के साथ-2 गाल के कबीलों में भी ऐसी ही एक प्रथा प्रचलित थी जिसके अनुसार इन जातियों का नेता अपने अनुयायियों से घिरा रहता था। ये अनुयायी अपने स्वामी की ओर से युद्धों में भाग लेते थे। तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करते थे, इस प्रथा को कमेन्डेसन कहा जाता था।

④ आर्थिक कारण :→ सामंतवाद के उदय में आर्थिक कारणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नौवीं शताब्दी का काल यूरोप में अराजकता, असुरक्षा, आर्थिक

Date / / Page no.

संकट तथा सामाजिक असंतोष का काल था। इस काल में यूरोप पर चारों ओर से बर्बर जातियों के आक्रमण होने लगे। दूसरी ओर भूमि पर बड़े-बड़े भू-स्वामियों का अधिकार होता चला गया। जमींदारों ने एक दूसरे की संपत्ति को हड़पने के लिए एक दूसरे पर आक्रमण करने शुरू कर दिए। इसीलिए छोटे जमींदार अपनी सुरक्षा के लिए बड़े जमींदार की शरण में आते चले गए।

धार्मिक कारण :→ कैरोलिंगियन सम्राट चार्ल्स ने चर्च पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था। लेकिन मध्यकाल में ईसाई चर्च काफी शक्तिशाली हो गए। राजा, धनी लोग अधिकारीगण इत्यादि चर्च को जमीन, धन-संपत्ति आदि चढ़ावे या दान के रूप में प्रदान करते था। जनसाधारण जनता भी चर्च को विभिन्न प्रकार के दान प्रदान करते थे। परिणाम स्वरूप चर्च के योग अथवा धन-संपत्ति जमा हो गई।

निष्कर्ष :→ अंत में कहा जा सकता है।

Date / / Page no.

कि सांमतवादी व्यवस्था यूरोप में रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात् प्रकाश में आई। जैसे-२ राजा शक्तिहीन होता चला गया, वैसे-२ ही जमींदार शक्तिशाली बनते चले गए, राजा चाहकर भी जमींदारों की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त नहीं कर सका। लेकिन ये जमींदार भी आपस में संघर्ष रत रहते थे, जिससे समाज में अराजकता, असुरक्षा तथा अशांति फैल गई।

Date / / Page no.

प्रश्न→ सामन्तवाद के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए?

उ०→ रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात् नौवीं शताब्दी में सामंतवाद का उत्थान हुआ। सामंतवाद का स्वरूप विभिन्न देशों में अलग - अलग रहा। कई शताब्दियों तक यह प्रणाली यूरोप में शान्ति स्थापित करती रही। परन्तु 10वीं सदी में सम्राट ने पुनः शक्तियाँ धारण कर ली। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन आदि देशों में शक्तिशाली राज्यों की स्थापना हुई। इसके पतन के मुख्य कारण इस प्रकार थे।

i) निरंकुश राजतंत्रों की पुनः स्थापना :→ रोमन साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने के पश्चात् एक विशेष परिस्थिति में सामंतवाद का जन्म हुआ था परंतु सामंतों के आपसी युद्धों तथा उनके अनैतिक कार्यों से अति शीघ्र ही आम जनता परेशान हो गई। सामंत अपनी लड़ाई - झगड़ों के कारण निर्बल हो गए। दूसरी ओर आम जनता तथा राजा ने सामंतों का विरोध करना शुरु कर दिया राजा ने उचित अवसर देखकर सामंतों को

Date / / Page no.

नष्ट करने के लिए एक शक्तिशाली राष्ट्रीय सेना गठित कर ली अतः राजतंत्र की पुनः स्थापना के परिणाम स्वरूप सामंतवाद का पतन हो गया।

2) राष्ट्रीयता की भावना का उदय :→ यूरोप में सामंतवाद के पतन का एक और मुख्य कारण यूरोप के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास होना था। मध्यकाल में यूरोप ने शिक्षा तथा साहित्य का विकास बहुत जोरों पर हुआ। दूसरी ओर सामंत जन-साधारण जनता पर अत्याचार करते थे, उन्होंने कृषक तथा दासों का बहुत शोषण किया। आम जनता दासों के प्रशासन से परेशान हो गई। राष्ट्र के प्रति प्रेम तथा बलिदान की भावना ने विकेन्द्रीय करण शक्तियों के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3) धर्मयुद्ध :→ मध्यकाली यूरोप में हुए धर्मयुद्धों ने भी सामंतवाद के पतन में अहम भूमिका निभाई इन युद्धों ने सामंतवाद की जड़ों को हिलाकर रख दिया ईसाईयों के पवित्र

स्थान येरूसलम को लेकर ईसाइयों तथा मुसलमानों में संघर्ष आरंभ हो गया। शीघ्र ही यह संघर्ष धर्मयुद्धों में परिवर्तित हो गया। ये युद्ध 1025 ई० से 1953 ई० तक चलते रहे। ईसाइयों ने रोमन पोप से कहा कि वह सामंतों को धर्मयुद्धों में भाग लेने के लिए सेना सहित भेजने का आदेश देते हैं। अतः पोप के आदेशों पर सामंतों ने धर्मयुद्ध में भाग लिया इन धर्मयुद्धों के कारण सामंतों का पतन हो गया।

(4) बारूद का आविष्कार :-

सामंतवाद के पतन में बारूद के आविष्कार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामंतों ने अपने दुर्ग पहाड़ियों की चोटियों पर बना रखे थे जो चारों ओर से पत्थरों की सुरक्षित दीवारों से घिरे रहते थे इसके अलावा दुर्गों के चारों ओर गहरी - चौड़ी खाई होती थी जो दल-दली कीचड़ तथा पानी से भरी होती थी। उन्होंने चारों ओर से अपने आप को सुरक्षित स्थान पर रखा हुआ था।

(5) कृषकों तथा दासों की दुर्दशा :-

यूरोप के समाज में कृषकों तथा दासों की संख्या सबसे (अच्छी) अधिक थी। परंतु उन्हें किसी भी प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक अधिकार प्राप्त नहीं थे, सामंत किसानों तथा दासों से जबरदस्ती का काम करवाते थे। और उनको कदम - कदम पर उत्पीड़ित करते थे। सामंत उन्हें जानवरों से भी बदतर समझते थे उनसे तरह - तरह के काम लिए जाते थे।

(6) नगरों का विकास :-

उसस्य व्यापार की पुनः उन्नति के परिणामस्वरूप यूरोपीय नगरों की जोरों पर विकास हुआ। धन की अधिकता तथा जनसंख्या में वृद्धि के कारण यूरोप में एशिया की बनी विलासप्रिय वस्तुओं की माँग बढ़ गई। भू - मध्य सागर के रास्ते से पूर्व से पश्चिम में व्यापार होने लगा। इसी समय व्यापारिक श्रेणियों की स्थापना होने लगी। अब व्यापार नगरों के लिए नए - नए नगरों की आवश्यकता महसूस

की गई। इटली, इंग्लैंड, फ्रांस आदि देशों में नए नगरों का उत्थान हुआ तथा पुराने नगरों का विकास हुआ।

7) सांमतो के आपसी संघर्ष :→ सांमतवाद के पतन के सांमतो के आपसी संघर्षों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सांमत अपनी - अपनी जागीदारो में स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करते थे एक सांमत की दूसरे सामंत से नहीं बनती थी वे एक - दूसरे की जागीर पर अधिकार करने के लिए आपस में युद्ध करते रहते थे सांमतो के पास एक शक्तिशाली सेना भी होती थी युद्धों के समय वे अधीनस्थ सांमतो से भी सैनिक सहायता प्राप्त करते थे।

8) चर्च का योगदान → चर्च ने सांमतवादी व्यवस्था के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चर्च ईसाई धर्म का प्रचार करते थे और लोगों को चरित्रवान बनने की शिक्षा देते थे चर्च सांमतो को भी अनुशासन में रहने के आदेश देते थे चर्च ने सांमतो के युद्धों को रोकने के लिए तथा समाज में शांति व्यवस्था स्थापित करने के लिए 40 दिनों के लिए युद्धों पर प्रतिबंध लगा दिया।

(9) मुद्रा का प्रचलन :→ मुद्रा के प्रचलन के परिणामस्वरूप भी सांमतवाद का पतन हुआ। 15वीं शताब्दी में व्यापार में मुद्रा का प्रचलन काफी होने लगा। हर वस्तु को सिक्कों से खरीदा जाता था जबकि सांमतो के अधीन व्यापार वस्तु विनिमय के माध्यम से किया जाता था।

(10) स्थाई सेना की भर्ती :→ सांमत-वादी युग में राजा अपने पास स्थाई सेना की भर्ती नहीं करते थे। युद्धों के समय वे सांमतो की सेनाएं बुला लेते थे परन्तु सांमतो की सेनाएं राजा के प्रति वफादार नहीं थी। परिणामस्वरूप युद्धों में राजा की विशाल सेनाएं पराजित हो जाती थी। इससे राजा शक्तिहीन हो गए।

11. मध्यम वर्ग का योगदान → 15वीं सदी

Date / / Page no.

में यूरोप के समाज में मध्यम वर्ग का उत्थान हुआ। इस वर्ग में व्यापारी, डॉक्टर, वकील, उद्योगपति था विद्वान लोग आते थे इसमें धन की कमी नहीं थी।

निष्कर्ष :→ अतः हम कह सकते हैं कि जब यूरोप में अराजकता तथा अशांति का वातावरण उत्पन्न हुआ और केन्द्रीय सत्ता निर्बल हो चुकी थी तो उस समय सामंतवाद का जन्म हुआ। सामंत धीरे-धीरे शक्तिशाली हो गए। उन्होंने राजा की दुर्बलता का लाभ उठाकर कृषकों तथा दासों के साथ अमानवीय व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। इससे सामंतवाद का अंत हो गया।

Date / / Page no.

प्रश्न → यूनानी सभ्यता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उ० → लौहकालीन यूनानी सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में अपना एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इससे विश्व की अनेक सभ्यताओं को अपना ज्ञान प्रदान किया है। यूरोपीय सभ्यता विशेष तौर पर इस सभ्यता की ऋणी मानी जाती है।

राजनीतिक जीवन :→ डॉ० विपिन बिहारी सिन्हा के अनुसार, " राजनीति के क्षेत्र में प्राचीन यूनान की सर्वश्रेष्ठ देन उसकी संवैधानिक और लोकतंत्रात्मक पद्धति है। अनेक यूरोपीय राजनीतिक सिद्धान्तों का जन्म यूनान में ही हुआ था। " अन्य इतिहासकार भी यह मानते थे कि राजनीतिक विज्ञान का जन्म भी यूनान में ही हुआ। अ० स्व्यु० शब्दों जैसे पोलीटिक्स तथा डेमोक्रैसी की उत्पत्ति यूनानी शब्द पोलिस तथा डेमास से हुई थी प्राचीन काल में लगभग सभी यूनानी नगर राज्यों में निरकुंश शासन प्रणाली प्रचलित थी स्पार्टा

नगर राज्य ने निरंकुश सैनिक तंत्र को किसी न किसी रूप में जारी रखा। स्पार्टा नगर-राज्य में एक साथ दो राजाओं की नियुक्ति की जाती थी। इन राजाओं की सहायता के लिए 28 सदस्यों की एक सभा होती थी जैसे जेरूसिया के नाम से जाना जाता था। इसके अतिरिक्त एक समिति होती थी। जिसके 30 वर्ष की आयु वाले नागरिक सदस्य होते थे। न्याय के क्षेत्र में ज्यूरी प्रथा प्रचलित थी जो स्पार्टा के नागरिकों के आपसी झगड़ों का निपटारा करती थी।

सामाजिक जीवन

1) सामाजिक वर्गीकरण :- लौहयुगीन यूनानी समाज दो वर्गों अर्थात् नागरिक और गैर नागरिक में बँटा हुआ था।

नागरिक :- लौहयुगीन यूनान में नागरिक वर्ग में उच्च वर्ग के लोग आते थे, इस वर्ग के लोग यूनान के मूल नागरिक होते थे वे अपने देश की

भूमि तथा राज्य के स्वामी थे।

गैर- नागरिक :- यूनानी समाज में दूसरा वर्ग गैर-नागरिकों का था। जिनकी संख्या बहुत अधिक थी इनमें अधिकतर लोग विदेशी थे समाज में इन्हें किसी भी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त नहीं थी ये लोग सरकार को विभिन्न प्रकार के नाजायज कर देते थे।

2) स्त्रियों की दशा :- लौहकालीन यूनानी समाज पुरुष प्रधान था प्राचीन यूनान में स्त्रियों की दशा बहुत दयनीय थी। यूनान में बहु-विवाह तथा रखैल की प्रथा जोरों पर प्रचलित थी स्त्रियों को दासों की तरह खरीदा और बेचा जाता था। स्त्रियाँ घर का सारा कार्य संपन्न करती थी। वहाँ पर स्त्री की ओर शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था।

3) निवास स्थान :- लौह कालीन यूनान में उच्च वर्ग के लोग भव्य महलों में निवास करते थे उनके भवन पक्की ईंटों तथा लकड़ी से बनाए जाते थे। जिनमें संगमरमर भी लगा होता था।

उनके भवनों में अनेक कमरे होते थे तथा उनमें जीवन की समस्त वैभव-पूर्ण सुविधाएं उपलब्ध रहती थी।

4) **पहनावा** :-> यूनान के लोग ऊनी तथा सूती दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे उनके वस्त्रों में ज्यादा तड़क-भड़क नहीं पाई जाती थी यूनानियों के वस्त्र विभिन्न रंगों के होते थे। यूनानियों के वस्त्र दो तरह के होते थे। ऊपरी भाग को ढकने वाले तथा निचले शरीर को ढकने वाले।

5) **खान-पान** :-> यूनानी सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, चावल, मक्का, बाजरा, प्याज, लहसुन आदि का भोजन में प्रयोग करते थे भोजन लकड़ी तथा धातु के बर्तन में डालकर पकाया और परोसा जाता था यूनान में विभिन्न प्रकार के पकवान तथा मिठाईयां भी बनाई जाती थी अमीर लोग भोजन के लिए चाँदी व सोने के बर्तनों का प्रयोग करते थे।

6) शृंगार तथा आभूषण

7) मनोरंजन

आदि।

आर्थिक जीवन :-> यूनान के लोगों का आर्थिक जीवन इस प्रकार था।

1) **कृषि** :-> यूनान के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। यूनानी गेहूँ, मक्का, चावल, बाजरा, विभिन्न प्रकार की सब्जियां तथा फलों की खेती करते थे। यूनान में भूमि का मालिक सामन्त होते थे उस समय जैतून की बागवानी भी की जाती थी किसानों तथा दासों से खेतों में सभी प्रकार का काम कराया जाता था खेती हल तथा बैलों से की जाती थी।

2) **पशुपालन** :-> यूनान के लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था लौहकाल में यूनानियों की आर्थिक स्थिति भूमि और पशुओं की सं० में आंकी जाती थी। उस समय, भेड़, बकरी, कुत्ता, गाय, बैल तथा घोड़े बड़ी सं० में पाले जाते थे। उस समय सभी पशुओं का व्यापार होता था।

3) **उद्योग** :-> यूनान में विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग तथा दस्तकारियां

Date / / Page no.

स्थापित थी। यूनान में विभिन्न धातुएँ तथा खनिज पदार्थ आसानी से प्राप्त हो जाते थे। उस समय यूनान में सूत कातना, कपड़ा बुनना, रंगना आदि उद्योग धंधे प्रचलित थे। इसके अलावा आभूषण, हल, बर्तन आदि द्रव्य होते थे जलपोत, जैतून का तेल, शराब आदि उद्योग भारी मात्रा में बनाए जाते थे। स्त्री-पुरुष दोनों ही कुटीर उद्योगों तथा घरेलू में किया जाता था।

व्यापार :- लौहकालीन यूनान में व्यापार तथा वाणिज्य की पूरे जोरों पर प्रचलित था। यूनान से जैतून का तेल विदेशों में निर्यात किया जाता था विदेशी व्यापार जहाजों द्वारा भूमध्य सागर के तटों पर किया जाता था इटली, सिसली आदि उपनिवेशों में माल भारी मात्रा में बेचा जाता था। यूनान के पश्चिमी एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप आदि देशों के साथ अच्छे व्यापार संबंध थे। मिस्री के सुंदर बर्तन जिन पर बढ़िया प्रकार की निक्कासी होती थी।

Date / / Page no.

धार्मिक जीवन :- लौहकालीन यूनान के निवासियों को अपने देवी-देवताओं में बहुत विश्वास था वे बहुदेववादी थे उनकी निम्न वर्णन इस प्रकार थे।

देवी-देवताओं की उपासना :- यूनानी निवासी विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना करते थे। यूनानी देवताओं का उदय राजा इन्द्र अथवा आकाश का देवता था। वह अपने 12 पुत्रों तथा अपनी पत्नी के साथ ओलम्पस पर्वत पर निवास करता था उसकी पत्नी पृथ्वी थी।

प्राकृतिक देवताओं की उपासना :- यूनान निवासी देवी-देवताओं के अतिरिक्त प्रकृति के देवताओं की भी पूजा करते थे, वे पृथ्वी, आकाश, वायु, नदी, आदि की पूजा करते थे, वे पूजा में अन्न, फल-फूल, पशु, सोना-चांदी आदि का चढ़ावा देते थे मंदिरों में नाच-गानों के साथ पूजा की जाती थी। यूनानी भूत-प्रेत में भी विश्वास करते थे।

Date / / Page no.

3) मन्दिर
4) धार्मिक अंधविश्वास
आदि।

सांस्कृतिक जीवन :→ यूनानियों ने सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अभूतपूर्व उन्नति की। यूनान के लोगों के सांस्कृतिक जीवन को उन्नति के शिखर पर पहुँचने में कला, विज्ञान तथा शिक्षा - साहित्य का बड़ा योगदान रहा था, इसकी विशेषताएँ इस प्रकार है।

1) कला
2) वास्तु कला।
डोरिक शैली।
3) आयोनियन शैली
कोरिन्थ शैली
हैलेनिस्टिक युग
मूर्तिकला :→ लौहयुग में मूर्तिकला का भी बहुत विकास हुआ इसे तीन कालों आर्केइक, हैलेनिक तथा हैलेनिस्टिक में बांटते है।
2) चित्र कला
3) संगीत कला।

Date / / Page no.

शिक्षा तथा साहित्य :→ लौहकालीन यूनान मे शिक्षा व साहित्य का भी बहुत विकास हुआ जिसका वर्णन इस प्रकार है।

1) शिक्षा।
2) साहित्य।
कविता, नाटक, इतिहास, दर्शन, विज्ञान, ज्योतिष आदि।

निष्कर्ष :→ अतः कह सकते हैं कि यूनान ने प्राचीन काल मे राज०, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक क्षेत्र मे बहुत उन्नति की। यूनान में आर्यों ने एक उच्च कोटि के समाज की स्थापना की। यूनानियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था वे व्यापार व वाणिज्य मे रुचि लेते थे यूनानी प्राकृतिक देवी - देवताओं की उपासना करते थे उन्होंने कला, शिक्षा - साहित्य तथा विज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत उन्नति की।

DELTA My NoteBook

UNIT – 3

प्रश्न→ इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति का वर्णन कीजिए?

उ०→ इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक स्थिति इस प्रकार थी।

अज्ञानता या बर्बरता का युग :→ मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व अरब में 'जाहिलिया' अर्थात् अज्ञानता और बर्बरता का युग प्रचलित था इस युग में अरब राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था। सभ्यता तथा संस्कृति का तो दूर–दूर तक नामोनिशान नहीं था उस समय अरब के लोग लड़ते – झगड़ते रहते थे वे खानाबदोशों का जीवन व्यतीत करते थे।

सामाजिक विभाजन :→ इस्लाम के उदय से पूर्व अरब का समाज मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित था।

1) बद्दू।
2) शहरी लोग।

बद्दू :→ बद्दू घुमक्कड़ जाति के बर्बर तथा असभ्य लोग थे ये लोग चारागाहों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते – जाते रहते थे वे अपने साथ तम्बू रखते थे और उन्हीं को अपना निवास स्थान बना लेते थे रेगिस्तान के शुष्क स्थान की भाँति उनका जीवन भी अत्यंत शुष्क था। अरब की जलवायु ने उन्हें अत्यधिक कठोर तथा बर्बर बना दिया था वे स्वभाव के बहुत खूंखार थे दया, सहनशीलता, तथा प्रेम की भावना उनकी विशेषता नहीं थी।

वंश – व्यवस्था :→ बद्दुओं का समाज वंश व्यवस्था पर आधारित था एक परिवार खेमा का प्रतीक था प्रत्येक परिवार का एक खेमा होता था कई खेमों को मिलाकर एक डेरा बनता था, जिसे हे कहा जाता था हे में एक ही वंश तथा कौम के लोग आते थे लगभग 150 कौमों को मिलाकर एक कबीला बनता था।

इस प्रकार कबीला में एक ही वंश तथा कौम के लोग होते थे कुछ वंशो के नाम के आगे स्त्री - द्योतक शब्द लिखे मिलते हैं। जिससे मालूम होता है। कि उस समय अरब में मातृ सत्तात्मक समाज भी प्रचलित था।

शहरी लोग :→ शहरी लोग बढ़िया एवं पक्के मकानों में निवास करते थे उनका जीवन सुसंगठित, स्थाई, शांतिप्रिय तथा न्यायप्रिय था। उनका पहनावा, रहन - सहन, खान - पान भी बहुत उच्चकोटि का था। वे व्यापार वाणिज्य, कृषि तथा पशुपालन से अपना गुजर - बसर करते थे। शहरी लोग बहुत ही सभ्य होते थे, ये शान्त प्रवृत्ति के होते थे, तथा लड़ाई - झगड़ों को पसन्द नहीं करते थे व्यापार तथा वाणिज्य में निपुण होने के कारण शहरी लोग बहुत ही समृद्ध थे लेकिन बद्दू लोग शहरी लोगों पर आक्रमण करके उनकी शान्ति को भी भंग कर देते थे।

स्त्रियों की स्थिति :→ इस्लाम के उदय से पूर्व स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। उनको घर की चार- दीवारी तक ही सीमित रखा जाता था। उन्हें शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नहीं था उन्हें पुरुष की चल - अचल संपत्ति समझा जाता था अरब में बहु - विवाह प्रथा प्रचलित थी स्त्रियों को केवल भोग - विलास की वस्तु ही समझा जाता था महिलाएं भी पर- पुरुषों के साथ यौन - संबंध स्थापित करने में पीछे नहीं थी।

दास प्रथा :→ हजरत मुहम्मद साहिब के जन्म से पूर्व अरब में दास प्रथा जोरों पर प्रचलित थी दासों को युद्ध में बंदी बनाकर लाया जाता था। इसके अलावा दासों का व्यापार भी होता था। उस समय दासों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। उनकी जिन्दगी तथा मौत उनके स्वामी के हाथों में होती थी उन्हें स्वामी की सेवा करनी होती थी।

अरब की धार्मिक स्थिति

1) **मूर्ति पूजा** :-> इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की धार्मिक स्थिति अच्छी नहीं थी। बद्दुओं के पास धर्म नाम की कोई वस्तु नहीं थी। अरब निवासी बहुदेववादी होने के साथ-साथ प्राकृतिक देवी-देवताओं के उपासक थे, उनमें मूर्ति पूजा भी प्रचलित थी लेकिन यहूदी तथा ईसाई धर्म के अनुयायी मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते थे बद्दुओं में प्रत्येक कबीले का अपना देवता होता था। सेमेटिक लोगों का मानना था कि पेड़-पौधों, गुफाओं, झरनों तथा पत्थरों में दुष्ट आत्माएं निवास करती थी।

2) **प्रकृति की पूजा** :-> अरब के लोग प्राकृतिक देवी-देवताओं की भी उपासना करते थे बद्दुओं के नक्षत्र चन्द्रमा पर आधारित थे अतः वे चन्द्रमा की उपासना करते थे। खेतिहर तथा कृषक लोग सूर्य की उपासना करते थे लेकिन बद्दू सूर्य की उपासना नहीं करते थे उनका मानना था कि सूर्य उनके पशुओं, पेड़-पौधों आदि को जला देगा। इसलिए वे चन्द्रमा की उपासना करते थे।

3) **अन्धविश्वास** :-> पूर्व इस्लाम अरब में विभिन्न प्रकार के अंधविश्वास प्रचलित थे। लोग भूत-प्रेत, जिन आदि में विश्वास करते थे वे देवताओं को शुभ प्रकृति के तथा आत्मा को दुष्ट प्रकृति के मानते थे। अरब के लोग देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशुओं तथा मनुष्यों की बलि चढ़ाते थे। पशुओं में ऊँट की बलि दी जाती थी उनका मानना था कि मनुष्य को मृत्यु के पश्चात् ऊँट की सवारी की जरूरत होती है।

4) **पक्षियों की पूजा** :-> इन देवी-देवताओं के अलावा पक्षियों की पूजा भी अरब में प्रचलित थी। अरब के लोग बूज तथा अरफ की उपासना करते थे अतः इस्लाम से पूर्व अरब के लोग बहुदेववादी थे इस प्रकार बद्दुओं का कोई निश्चित धर्म नहीं था और न

उनका कोई पवित्र ग्रन्थ था।

निष्कर्ष :→ अतः कहा जा सकता है कि अज्ञानता के युग में अरब के लोगों की राष्ट्रीयता तथा राजनीतिक चेतना का पूर्णता अभाव था उस समय लोग जागरूक नहीं थे वे कबीलों में प्रचलित वंश परंपरा पर आधारित थे। उनमें राष्ट्रीयता की कोई भावना नहीं थी कबीलों में भाईचारे तथा आपसी चैन का अभाव दिखाई देता था।

प्रश्न→ मुहम्मद साहब का आरंभिक जीवन तथा शिक्षाओं का वर्णन कीजिए?

उ०→ मुहम्मद साहब का आरंभिक जीवन

1) पैगम्बर मुहम्मद साहब का जीवन → मुहम्मद साहब के प्रारंभिक जीवन के विषय पर बहुत कम स्त्रोत उपलब्ध हैं उनके जीवन के विषय पर लिखी गई इब्न हिशाम तथा इब्न - ईसाक की पुस्तकें उनके विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं, परंतु ये पुस्तकें 8 वीं शताब्दी में लिखी गई थी इसके पश्चात बेजेन्टाइन इतिहासकार थियोफेंस ने मुहम्मद साहब की जीवनी के विषय में एक ऐतिहासिक पुस्तक लिखी। परन्तु इन पुस्तकों की सत्यता तथा प्रामाणिकता के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। मुहम्मद साहब के बचपन का नाम अल- अमीन था जिसका अर्थ विश्वासी होता है। कुरान में उन्हें मुहम्मद तथा अहमद के नाम से पुकारा जाता था। बड़े होकर वे मुहम्मद के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शिक्षा :→ प्राप्त स्त्रोतों से पता

चलता है कि मुहम्मद साहब को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ माता-पिता का साया बचपन में ही उठ जाने के कारण उन्हें कभी स्कूल या मदरसा में जाने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। उनके चाचा अब-तालिब ने उन्हें भेड़ों तथा ऊँटों की रखवाली करने के काम पर लगा दिया 12 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने चाचा के ऊँटों की कारवा के साथ सीरिया की यात्रा की इस यात्रा के दौरान उनकी भेंट एक ईसाई पादरी बहिरा से हुई बहिरा नामक पादरी ने उनको कुछ उपदेश दिए जिनका उनके जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा।

विवाह :-> मुहम्मद साहब बचपन काल से ही एकांत स्थान पर बैठकर सुख तथा दुख के विषय में सोचते रहते थे वे अरबवासियों के आपसी लड़ाई-झगड़ों को देखकर काफी परेशान होते थे मुहम्मद साहब की अपनी चाची से अनबन रहती थी वह उन्हें अनेक यातनाएँ देती थी अपनी दयनीय स्थिति से परेशान होकर

मुहम्मद साहब ने कोई नौकरी करके आजीविका प्राप्त करने का निश्चय किया। युवा होने पर उनका संपर्क खदीजा नामक एक विधवा महिला से हुआ जो कुरैश वंश से संबंध रखती थी 619 में उनकी मृत्यु हो, गई मुहम्मद साहब ने आयशा नामक स्त्री से विवाह किया उनके घर कई पुत्र-पुत्रियों ने जन्म लिया था।

ज्ञान प्राप्त करना तथा पैगम्बर बनाना ->

खदीज से विवाह करने के पश्चात् मुहम्मद साहब की रोजी-रोटी संबंधी यातनाएँ समाप्त हो गई, अब वे निश्चित होकर चिंतन करने लगा। मक्का के बाहर स्थित हीरा नामक पहाड़ी की गुफा में जाकर ध्यान मग्न करने लगे। उन्हें अक्सर दो बातें विचलित करती थी - एक उस समय अरब समाज में आई बुराइयाँ और उसके ईसाई जो अक्सर उनसे मिलते थे उनका दोनों का अपना-अपना धर्म था।

Page no.

मुहम्मद साहब की शिक्षाएं →

मुहम्मद साहब की शिक्षाएं तथा इस्लाम के प्रमुख सिद्धान्त इस प्रकार हैं।

1) **ईश्वर या अल्लाह एक हैं** :→ मुहम्मद साहब ने लोगों को तौहीद की शिक्षा प्रदान की। इसके अनुसार अल्लाह व खुदा एक हैं और हजरत मुहम्मद उनके पैगम्बर हैं। अल्लाह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी हैं इसलिए सच्चे मन से उसकी इबादत करनी चाहिए।

2) **अल्लाह की आज्ञा का पालन करना** — पैगंबर मुहम्मद साहब के अनुसार संसार नश्वर हैं और उसकी रचना अल्लाह ने की हैं। कयामत के दिन मनुष्य की अच्छाइयों तथा बुराइयों का निर्णय करना चाहिए जो व्यक्ति अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करता हैं उसे स्वर्ग उपहार स्वरूप मिलता हैं और जो अल्लाह की आज्ञाओं का पालन नहीं करता वह नरक का भागी बन जाता हैं। पाक इन्सान वही हैं जो अल्लाह के प्रति वफादार हैं और उसकी इबादत करता हैं।

समानता :→ इस्लाम सभी को समानता की दृष्टि से देखता हैं। मुहम्मद साहब के अनुसार इस्लाम के द्वार अमीर - गरीब, छूत - अछूत, देशी - विदेशी आदि सभी के लिए समान रूप से खुले हुए हैं। अल्लाह के समक्ष सभी बराबर हैं, तथा कोई छोटा या बड़ा नहीं हैं।

4) **मूर्ति पूजा में विश्वास** → इस्लाम में मूर्ति - पूजा का कोई स्थान नहीं हैं। स्वयं हजरत मुहम्मद मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे उन्होंने इस्लाम मे मूर्ति पूजा को कुफ्र कहकर पुकारा हैं। कुफ्र का अनुकरण करने वालो को काफिर कहा गया हैं। मुहम्मद साहब को काफिरों को पराजित करना प्रत्येक मुसलमान का धार्मिक कर्तव्य बनाया था।

5) **नमाज पढ़ना** → इस्लाम के अनुसार प्रत्येक सच्चे मुसलमान को एक दिन रात में पाँच बार नमाज अवश्य

पढ़नी चाहिए, नमाज के 5 समय हैं। प्रातः काल की नमाज, दोपहर, दोपहर के उपरान्त, सध्याकाल, सूर्यास्त के पश्चात की नमाज। नमाज से पहले मुँह, हाथ और पाँव धोना धर्म विश्वासों का विहित कर्तव्य है।

6) व्रत या उपवास → रमजान के महीने में प्रत्येक मुसलमान को व्रत अर्थात रोजे रखने चाहिए। मुहम्मद साहब के अनुसार रमजान के महीने में सभी मुसलमानों को भोजन, पानी या कोई द्रव्यमान भी, गन्ध व मौज मस्ती आदि का भोर से सूर्यास्त तक त्याग कर देना चाहिए।

7) हज की यात्रा।
8) गरीबों की सहायता के लिए। जकात कर।
9) विवाह कानून।
10) विलास की वस्तुओं पर प्रतिबंध।
11) दास की स्वतंत्रता
12) दण्ड व्यवस्था।
13) कुरान।
14) इस्लाम धर्म ग्रहण करना।

निष्कर्ष → ज्ञान प्राप्ति के पश्चात मुहम्मद साहब ने इस्लाम धर्म की स्थापना की। सर्वप्रथम उनकी पत्नी खदीजा ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और अतः कहा जा सकता है कि मुहम्मद साहब वास्तव में एक पैगम्बर थे उन्होंने गरीब परिवार में जन्म लेते हुए तथा अनपढ़ होते हुए भी ने केवल कुरान को।

Date / / Page no.

प्रश्न→ उम्मैद खलिफाओं के अधीन इस्लामी राज्य का स्वरूप लिखिए?

उ०→ अली की मृत्यु के साथ ही प्रजातांत्रिक काल समाप्त हो गया था। मुआविया ने 661 ई० में उमैयद वंश की स्थापना की उसने अपने पुत्र याजिद को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया। और एक वंश की स्थापना की। इसके साथ ही अरब में खलीफा के निर्वाचन की परंपरा समाप्त हो गई और खिलाफत का पद हमेशा के लिए वंशानुगत हो गया। अरब के इतिहास में उमैयद खिलाफत पहला राजवंश था इस वंश की राजधानी दमिश्क थी इस वंश ने 661 ई० से 750 ई० तक अरब पर शासन किया।

1) उमैयद राज्य का स्वरूप :→ धर्मनिष्ठ खलिफाओं के समय खलीफा का निर्वाचन मदीना की मस्जिद में अरब की जनता द्वारा किया जाता था। इस चुनाव में कबीलों की प्राचीन जनतंत्रात्मक निर्वाचन पद्धति को अपनाया जाता था। खलीफा अपने चुनाव के समय

Date / / Page no.

लोगों के प्रति निष्ठा की शपथ लेता था परंतु खलीफा या सरकार चुनने की यह उत्कृष्ट पद्धति चतुर्थ धर्मनिष्ठ खलीफा अली की मृत्यु के पश्चात बन्द हो गई। उसके पश्चात खलीफा एक निरंकुश राजा बन गया और राजा का पद उसकी निजी संपत्ति बन गया था। मुआविया ने खलीफा के पहले चुनावों में उत्पन्न होने वाली स्थिति का वर्णन किया गया है।

2) शूरा तथा खलीफा की स्थिति :→ आरंभ में शूरा एक चुनी हुई एवं प्रतिनिधि सीमित होती थी परंतु धर्मनिष्ठ खलीफा उमर ने शूरा से किसी भी प्रकार का परामर्श नहीं लिया। उसके पश्चात खलीफा द्वारा शूरा से परामर्श लेने की प्रथा समाप्त हो गई उमर द्वितीय जब हेज्जाज का गवर्नर था तो उसने एक परिषद का निर्माण किया, जिससे वह प्रान्त के प्रशासन संबंधी सभी प्रकार के मामलों पर सलाह मशविरा करता था। खलीफा बनने के पश्चात उसने कुछ विशिष्ट

DELTA My NoteBook

व्यक्तियों की एक सलाहकार परिषद् बनाई। चूंकि वह कुछ ही दिनों तक खलीफा के पद पर रहा। इसलिए उसकी सलाहकार परिषद् ज्यादा लाभदाय सिद्ध नहीं हुई थी। उमैयद राजवंश के आरंभिक खलीफाओं ने अपनी सुरक्षा के लिए सुरक्षा अधिकारियों की नियुक्ति नहीं की। परंतु अब मुआविया की हत्या का प्रयास किया गया तो उसने अपने राजमहल पर प्रहरी नियुक्त करना आरंभ कर दिया था यहाँ तक कि नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद के प्रार्थना - स्थल को दो भागों में विभाजित करके एक सुरक्षित स्थान बना दिया जिसे मकसूरा कहा जाता था।

3) केन्द्रीय सरकार :→ उमैयद राजवंश के खलीफाओं ने एक शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार की स्थापना की। खलीफा मुआविया ने खिलाफत को सर्वाधिक प्रतिष्ठा एवं शक्तियां प्रदान की थी अब से पूर्व खलीफा को मदीना की एक मस्जिद में प्रजातंत्रात्मक चुनाव प्रणाली के आधार पर सर्वसम्मति से चुना जाता था, परन्तु मुआविया पहला खलीफा था जिसने अपने जीवन काल में ही अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करके खिलाफत राजवंश की स्थापना की। उमैयद ने प्रशासन को अच्छी तरह से चलाने के लिए 5 परिषदों का निर्माण किया है 5 परिषदें इस प्रकार हैं।

1) सैनिक परिषद्।
2) वित्त परिषद्।
3) पत्राचार परिषद्।
4) मुद्रा या मुहर परिषद्।
5) डाक परिषद्।

4) प्रांतीय प्रबंध :→ उमैयद खलीफाओं ने प्रशासन को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए उसे विभिन्न प्रांतों में विभाजित किया हुआ था। उमैयद खलीफाओं के समय प्रान्तों की संख्या पाँच थी प्रत्येक प्रान्त में एक वायसराय अर्थात् गवर्नर की नियुक्ति की जाती थी कभी - कभी बड़े प्रान्तों में एक से स्थान पर दो वायसरायों की भी नियुक्ति कर दी जाती थी।

प्रान्तों के गवर्नरों का मुख्य कार्य प्रान्तों की देखभाल करना, प्रान्तों में शांति व्यवस्था बनाए रखना, विद्रोहों को दबाना, खलीफा के आदेशों का पालन करना आदि अनेक कार्य करना था गवर्नर अपने प्रत्येक कार्य के लिए खलीफा के प्रति उत्तरदायी थी।

5) **जिला प्रशासन** :→ उमैयद खलीफा ने अपने प्रशासन को प्रान्तों से आगे जिलों में बाँट हुआ था जिला के मुखिया को 'अमील' कहा जाता था। अमील की नियुक्ति खलीफा के द्वारा की जाती थी। उसके प्रमुख कार्य जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखना, चोर डाकुओं को पकड़ना, उपद्रवों को दबाना, भू - राजस्व इकट्ठा करना, तथा न्याय करना, था इसके अलावा वह जिला में प्रजाहितकारी कार्यों की भी देखभाल करता था।

6) **राजस्व प्रशासन** :→ उमैयद खलीफाओं के अधीन एक अच्छा राजस्व प्रशासन स्थापित था

धर्मनिष्ठ खलीफाओं के समय सरकारी कोषागार को जनता की संपत्ति माना जाता था, जिस पर इस्लामी राष्ट्र मण्डल के हर सदस्य का हक था कि वह राज्य की आय से भत्ता प्राप्त करे। सरकारी कोषागार की धन- संपत्ति प्रजाहितकारी कार्यों के लिए खर्च की जाती थी परन्तु मुआविया ने केन्द्रीय खजाने पर अधिकार करके उसे खलीफा की निजी संपत्ति बना दिया। उसने मिस्त्र से होने वाली पूरी आय आस के पुत्र अम्र को दे दी, क्योंकि चतुर्थ धर्मनिष्ठ खलीफा अली के विरुद्ध उसकी सहायता की थी, परन्तु उसने सहायता देने से मना कर दिया।

7) **सैनिक तथा पुलिस संगठन** :→ उमैयद साम्राज्य पूरी तरह से सैनिक-संगठन पर टिका हुआ था, मुआविया ने अपनी सेना में परम्परागत श्रेणियों को समाप्त करके केवल एक सैनिक दस्ते की व्यवस्था की। उमैयद खलीफाओं द्वारा सेना के दस्ते को पाँच भागों में विभाजित

किया जाता था- केन्द्र भाग, दोनों बाजुओं पर रहने वाला भाग, आगे का भाग, पीछे रहने वाला भाग। सेना में सैनिक लाइन चलते थे। खलीफा मारवान द्वितीय ने भी सेना को भागों में बाटने की पुरानी व्यवस्था समाप्त कर दी और उसके स्थान पर छोटी तथा संगठित टुकड़ियाँ बनाई जिन्हे कुर्दस कहा जाता था।

8) न्याय - प्रबंध :-> उमैयद खलीफाओं ने एक अच्छी न्यायिक व्यवस्था स्थापित कर रखी थी साम्राज्य का सर्वोच्च - न्यायाधीश (प्रधान - काजी) कहलाता था। प्रांतों में भी लोगों को न्याय प्रदान करने के प्रांतीय काजियों की नियुक्ति की जाती थी न्याय प्रशासन में काजियों की नियुक्ति करने का श्रेय खलीफा को जाता था जिसने 643 ई० में मिस्त्र में एक काजी की नियुक्ति की। इसके पश्चात् कानूनी तौर पर काजियों की नियुक्ति आरम्भ हो गई।

9) डाक विभाग :-> उमैयद खलीफाओं ने एक उच्चकोटि की डाक प्रणाली स्थापित कर रखी थी मुआविया ने खलीफा तथा प्रांतीय गवर्नरों के बीच पत्राकार व्यवस्था को सुगम बनाने तथा किसी भी प्रकार की धोखेबाजी को रोकने के लिए एक डाक विभाग की स्थापना की। सरकारी दस्तावेजों को मुहर बन्द करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाता था। दस्तावेजों को एक नकली प्रति सुरक्षित रख ली जाती थी इसके अतिरिक्त जन-साधारण लोगों के पत्रकार के डाक विभाग को 'अल - बरीद' कहा जाता था।

10) राजकीय अभिलेखागार :-> उमैयद खलीफा मुआविया ने एक रजिस्ट्री विभाग स्थापित किया बाद के खलीफाओं ने इस विभाग को और व्यवस्था प्रदान की। खलीफा अब्द-अल- मालिक तक उमैयदों ने राजकीय अभिलेखागार स्थापित किया। इसमें सभी प्रकार के रिकार्ड रखे जाते थे।

DELTA My NoteBook

निष्कर्ष :→ अतः कहा जा सकता है कि उमैयद खलीफाओं ने इस्लामी साम्राज्य में प्रजातंत्रात्मक प्रणाली के स्थान पर निरंकुश राजतंत्र की स्थापना की। मुआविया पहला खलीफा था। जिसने अपने जीवन काल में अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया। अब खलीफा पैगम्बर के प्रतिनिधि के तौर पर नहीं बल्कि एक वास्तविक शासक के तौर पर कार्य करता था उमैयद खलीफाओं ने शूरा नामक सलाहकार परिषद् को भी समाप्त कर दिया। अतः उमैयद काल में खिलाफत बादशाह में परिवर्तित हो गई।

प्रश्न → अब्बासियों के शासनों के अधीन मुस्लिम राज्यों की विशेषता का वर्णन कीजिए?

उ० → इस्लामी जगत् के इतिहास में अब्बासी राजवंश अपना एक विशेष महत्व रखता है। उमैयद वंश के शासनकाल तक अरब साम्राज्य की राजधानी दमिश्क थी परंतु अब्बासी खलीफाओं के समय दमिश्क का महत्व कम हो गया तथा उनके स्थान पर इराक का महत्व बढ़ गया, इसी प्रकार अरब के लोगों का महत्व समाप्त हो गया और उनका स्थान ईरानियों तथा खुरासानियों ने ले लिया। उमैयद वंश के शासनकाल में गैर-अरबों का कोई स्थान नहीं था, परंतु अब प्रशासन तथा समाज में उन्हें महत्वपूर्ण जगह प्राप्त हो गई, अबू-अल-अब्बास ने 750 ई० में अब्बासियों राजवंश की स्थापना की इस वंश ने 750 ई० से 1258 ई० तक शासन किया। इतिहासकार लीबिस के अनुसार : " अब्बासियों द्वारा उमैयदों के स्थान पर एक नये वंश के शासन की स्थापना करना सच्चे अर्थ में वंश परम्परा में परिवर्तन मात्र नहीं था। प्रत्युत शासन व्यवस्था में भी परिवर्तन आया।

अब्बासी खलीफा, एक सम्पूर्ण शक्ति

→ अब्बासी खलीफाओं ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। उनके राज्य का स्वरूप सम्पूर्ण राजतन्त्र था अब्बासिद प्रशासन में खलीफा एक सर्वोच्च राजा के तौर पर कार्य करता था वह सम्पूर्ण शक्तियों का मूल स्रोत था परम्परागत तौर पर अरब - जन - जातीय शेख जाति की अनिच्छुक सहमति के मुताबिक शासन चलता था। लेकिन अब अब्बासी खलीफा एक निरंकुश राजा की भाँति कार्य करता था। वह दैवीय अधिकारों में विश्वास रखता था। परन्तु यह अधिकार उसकी नियमित सशस्त्र सेना की शक्ति पर निर्भर करता था।

अब्बासिद खलीफाओं का शासन प्रबंध

:→ अब्बासिद खलीफाओं ने एक उच्चकोटि की शासन प्रणाली की नींव रखी। उन्होंने अपने प्रशासन को केन्द्रीय, प्रान्तीय प्रबंध में विभाजित कर रखा था, उनके शासन की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार थी।

केन्द्रीय प्रशासन

① **खलीफा** :→ अब्बासी साम्राज्य में समस्त साम्राज्य का मुखिया खलीफा कहलाता था उसकी शक्तियाँ असीम थी वह दैवीय अधिकारों में विश्वास करता था, वह वजीर, अमीर तथा काजी की सहायता से प्रशासन चलाता था उसका प्रमुख कार्य कानून बनाना, कानूनों को लागू करना तथा कानूनों के उल्लंघन करने वालों को दण्ड देना था। वह अपने राज्य का प्रधान, विधानपालिका, प्रधान कार्यपालिका, प्रधान न्यायपालिका तथा प्रधान सेनापति के रूप में कार्य करता था। वह सभी अधिकारियों की नियुक्ति करता था।

② **वजीर** :→ केन्द्रीय प्रशासन में खलीफा के पश्चात् वजीर का स्थान अन्य अधिकारियों में सबसे ऊपर था वजीर का पद फारसी शासन प्रणाली पर आधारित था। वह प्रशासनिक तन्त्र का प्रधान होता था। वजीर खलीफा के प्रतिनिधि या अन्तरंग मित्र के रूप में कार्य करता था, जबकि स्वंय खलीफा हरम की रंगरलियों में डूबा रहता था।

वह खलीफा के आदेश पर प्रान्तों के गवर्नरों तथा न्यायाधीशों की नियुक्ति करता था।

③ अन्य विभाग :→ अब्बासिद खलीफाओं ने प्रशासन को सही प्रकार से चलाने के लिए अनेक विभागों का गठन कर रखा था। खलीफा की सरकार को दीवान-उल-मजीब के नाम से जाना जाता था जिसका अध्यक्ष वजीर होता था। इसके अलावा वित्त विभाग, सम्राट की सम्पत्ति का विभाग, लेखा विभाग, युद्ध कार्यालय, आश्रितों व दासों से संबंधित विभाग आदि विभाग भी स्थापित थे।

वित्त विभाग :→ समस्त अब्बासी साम्राज्य में शक्ति सुदृढ़ वित्त व्यवस्था के बल पर की जाती थी। इसलिए खलीफा वित्त विभाग के महत्व को समझते थे। उन्होंने एक संगठित वित्त विभाग की स्थापना की थी वित्त विभाग को दीवान-उल खिराज अर्थात् करों का स्वामी कहा जाता था। अब्बासी काल में इस विभाग का बहुत महत्व था। इस विभाग का मुखिया "साहब अल खिराज" कहलाता था जो खलीफा की परिषद का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होता था। अब्बासी राज्य की आय के विभिन्न स्रोत थे, जकात कर मुसलमानों से जोती जाने वाली जमीन, पशु, सोना-चाँदी तथा व्यापारिक वस्तुओं पर एक निश्चित मात्रा में लिया जाता था। इस कर को गरीबों, यतीमों, विधवाओं, आगन्तुकों, गुलामों तथा इस्लाम के प्रसार के लिए खर्च किया जाता था।

आरक्षी विभाग :→ अब्बासी खलीफाओं ने एक उच्चकोटि का सैन्य संगठन तथा पुलिस प्रशासन स्थापित किया। परन्तु यह पूर्णतया दोषमुक्त नहीं था साम्राज्य में स्थाई तथा सुसंगठित सेना का अभाव था खलीफा के अंगरक्षक सैनिक ही स्थाई तौर पर भर्ती किये जाते। उन्हें हरम कहा जाता था निरन्तर युद्ध करने वाली सेना की टुकड़ी को मुरतजिक के नाम से पुकारा जाता था इन सैनिकों को सरकारी खजाने से नियमित वेतन मिलता था सेना की एक अन्य श्रेणी को स्वाकार के नाम से जाना

जाता था। इन सैनिकों की भर्ती केवल आपातकाल में अर्थात् युद्धों के समय की जाती थी। कृषक, बद्दू तथा शहरी लोग इस टुकड़ी के सैनिक होते थे इन्हें तभी तक रखा जाता था जब तक आपात स्थिति रहती थी इसके पश्चात् उन्हें सेवा मुक्त कर दिया जाता था इन सैनिकों का वेतन तथा भोजन भी सरकार के द्वारा दिया जाता था।

(4) डाक तथा खुफिया विभाग :-

अब्बासी खलीफाओं ने अपने साम्राज्य के सभी विभागों से संपर्क स्थापित करने के लिए एक उच्चकोटि की डाक प्रणाली स्थापित कर रखी थी। उस समय डाक विभाग का मुखिया 'साहिब-अल-बरीद' कहलाता था। यह विभाग सरकारी तथा गैर-सरकारी, दोनों प्रकार की सूचनाएँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता था अब्बासी काल में प्रत्येक प्रान्त में एक डाकघर होता था। समाचारों तथा सामानों को सुव्यवस्थित ढंग से एक दूसरे स्थान तक पहुँचाने के लिए साम्राज्य की राजधानी को विभिन्न सड़कों के द्वारा अन्य प्रान्तों से जोड़ा गया, इन सड़कों पर ऊँटों, घोड़ों तथा खच्चरों की सहायता से डाक ले जाने और लाने का कार्य किया जाता था। जन-साधारण जनता को डाक द्वारा पत्र भेजने के लिए काफी धन खर्च करना पड़ता था।

न्याय प्रशासन :-

अन्य वंश के खलीफाओं की तरह अब्बासी राजवंश के खलीफाओं ने भी न्याय प्रशासन की ओर उचित ध्यान दिया उन्होंने अरब की जनता को निष्पक्ष न्याय प्रदान करना अपना धार्मिक कर्तव्य माना। अब्बासी खलीफाओं ने न्याय के लिए काजियों की नियुक्ति की। काजी के पद पर उलमा वर्ग के लोगों की नियुक्ति की जाती थी। बगदाद में न्याय का प्रधान कार्यालय था। प्रधान न्यायधीश को काजी-अल-कुजा कहा जाता था। अबू-यूसुफ खलीफा महदी के समय प्रधान काजी के पद पर नियुक्त था। वह महदी के दो उत्तराधिकारी के समय तक प्रधान काजी के पद पर बना रहा। इस न्यायालय में दीवानी तथा फौजदारी दोनों प्रकार के मुकदमे सुने जाते थे। प्रान्तों तथा बड़े-2 नगरों में भी न्यायालय स्थापित थे।

Date / / Page no.

अन्य विभाग :- उपर्युक्त विभागों के अतिरिक्त अब्बासी खलीफाओं ने कुछ अन्य विभागों की भी स्थापना कर रखी थी। सरकारी पत्राचार के लिए उन्होंने पत्राचार विभाग स्थापित किया, जिसे दीवान-अल-तौकी कहा जाता था। इसी तरह दीवान-अल-नजर की 'अल-मजालिका' प्रजा के राजनीतिक तथा प्रशासनिक अन्यायों से संबधित शिकायतों को सुनता था। दीवान-अल-जिमान लेखा विभाग था जहां पर प्रशासन के समस्त रिकार्ड सुरक्षित रखे जाते थे लेखा विभाग की स्थापना खलीफा अल महदी ने की।

प्रान्तीय प्रबंध :- अब्बासी खलीफाओं ने विशाल साम्राज्य की स्थापना की। प्रशासन को सुविधापूर्वक चलाने के लिए उन्होंने अपने साम्राज्य को केन्द्र से आगे अनेक प्रान्तों में विभाजित किया। प्रान्तों की संख्या भौगोलिक परिवेश में घटती-बढ़ती रहती थी यहा तक कि प्रान्तों के क्षेत्र में भी परिवर्तित होते रहते थे प्रारम्भिक खलीफाओं के समय पश्चिमी, अफ्रीका, मिस्त्र, सीरिया,

Date / / Page no.

फिलिस्तीन, हेजाज, यमन या दक्षिणी अरब, बहराइन, अमन, इराक, जजीरा, अजान, विलई, खुजिस्तान, फारस, करमान, सिजिस्तान, तबरिस्तान, जर्जान, आर्मेनिया, खुरासान, ख्वारिज्म, बुखारा, समरकन्द, फरगाना, ताशकन्द, कुमिज, मदीना आदि प्रान्त थे।

निष्कर्ष :- संक्षेप में कहा जा सकता है कि अब्बासी खलीफाओं ने एक निरंकुश राजतंत्र की स्थापना की थी सभी खलीफा दैवीय अधिकारों में विश्वास रखते थे वे अपने को पृथ्वी पर अल्लाह की प्रतिछाया बताते थे वे एक निरंकुश शासक की तरह कार्य करते थे अब्बासी खलीफाओं ने एक उच्चकोटि की शासन प्रणाली स्थापित की। उन्होंने केन्द्र में विभिन्न विभागों की स्थापना कर रखी थी।

DELTA My NoteBook